



बिटिया विशेषांक

132वां अंक

# रेल राजभाषा

जनवरी-मार्च 2023



रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली

## सम्पादकीय



प्रधान सम्पादक की कलम से.....



'रेल राजभाषा' का 131 वां अंक 'बिटिया विशेषांक' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है पाठकों को यह अंक रोचक एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

हिंदी पत्रिका प्रकाशित करने का उद्देश्य, रेल कर्मियों की हिंदी में लेखन प्रतिभा को उजागर करना है। इससे हिंदी के प्रयोग-प्रसार को भी बढ़ावा मिलता है।

रेल राजभाषा के इस 'बिटिया विशेषांक' में पुत्री/स्त्री संबंधी कई सामग्री संकलित हैं, जैसे कहानियां, कविताएं, लेख आदि। इनमें बेटियों के साथ रिश्तों का अहसास कराती कविताएं/ कहानियां, बेटों के साथ एक अनूठी रेल यात्रा, महिला दिवस पर लेख आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, रोचकता एवं वैविध्य के लिए अन्य विषयों पर भी रचनाएं शामिल की गई हैं, जैसे सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकता में टेक्नोलॉजी का प्रयोग, बसंत ऋतु पर लेख, फिजी में आयोजित 12 वां विश्व हिंदी सम्मेलन और राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियों की झलकियां आदि।

इस अंक पर आपकी प्रतिक्रिया एवं बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

होली की शुभकामनाओं के साथ...

(डॉ. बरुण कुमार)

निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

## रेल राजभाषा

वर्ष: 2023

अंक: 132

जनवरी-मार्च, 2023

**संरक्षक**  
श्री अनिल कुमार लाहोटी  
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक  
अधिकारी, रेलवे बोर्ड

**मार्गदर्शक**  
दीपक पीटर गेब्रियल  
प्रधान कार्यपालक निदेशक  
(औद्योगिक संबंध)

**प्रधान संपादक**  
डॉ. बरुण कुमार  
निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

**संपादक**  
रिसाल सिंह  
संयुक्त निदेशक, राजभाषा

**सहायक संपादक**  
शशि बाला  
सहायक निदेशक,  
राजभाषा (पत्रिका)

**संपादन सहयोग**  
जितेन्द्र प्रधान  
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

**पता:-**  
राजभाषा निदेशालय  
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)  
नई दिल्ली-110001

**ई-मेल:**  
patrikahindi@gmail.com



आवरण का चित्र  
रुचि बाजपेयी शर्मा

इस अंक में

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ
1.	सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकता में टेक्नोलॉजी का प्रयोग	डॉ. बरुण कुमार	2
2.	बोलने वाली औरत	ममता कालिया (संकलन)	6
3.	सीख	डॉ. दमयंती सैनी	12
4.	मेरी बिटिया	अल्का सिंह परिहार	13
5.	विश्व हिंदी सम्मेलन	यतीन्द्रनाथ चतुर्वेदी	14
6.	मोबाइल में खोई बिटिया	रविबाला गुप्ता	17
7.	धूल या फूल	जितेन्द्र प्रधान	18
8.	आत्मबल	जलज कुमार गुप्ता	19
9.	आकाश में उन्मुक्त होके उड़ान भरने दो	ममता जैन	23
10.	बनन में बागन में बगरयो बसंत	डॉ. राजेश हजेला	28
11.	रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 145वीं बैठक की झलकियाँ		32
12.	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति की निरीक्षणों की झलकियाँ		33
13.	राजभाषा विभाग में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ		34
14.	राजभाषा विभाग में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियाँ		35
15.	प्रजासत्ताक भारत की बेटियाँ	संतोष कुमार	36
16.	डर किस बात का?	शैलेन्द्र कपिल	37
17.	गजल: बेटा	सलीम खान	37
18.	होली	सुभद्रा कुमारी चौहान	38
19.	राष्ट्रीय बालिका दिवस	संकलन	40
20.	प्रथम भारतीय महिला	संकलन	41
21.	काश! मेरी भी बिटिया होती	नीतेश कुमार सोने	42
22.	बजट और मध्यम वर्ग	शंकर कुमार	43
23.	वो खुशानसीब हैं	डॉ. अनुराग माथुर	45
24.	बेटी का विदा	माखन लाल चतुर्वेदी	46
25.	मेरी लाडली	प्रमोद कुमार भट्ट नीलांचल	47
26.	नित्या बिटिया की पहली रेल यात्रा	नरोत्तम नामदेव	48
27.	शिक्षा और राष्ट्रीय पुनरुत्थान	डॉ. चन्द्रकांत तिवारी	50

## सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकता में टेक्नोलॉजी का प्रयोग



पिछले कुछ वर्षों से राजनैतिक मुद्दों पर देश भर में हो रहे हिंसक उपद्रवों ने सुरक्षा की चिंताएं बढ़ा दी हैं। चाहे वह शाहीन बाग का आंदोलन हो या दिल्ली के दिल दहला देनेवाले दंगे- इनके बाद इस बात की तीव्रता से आवश्यकता महसूस की जा रही है कि दंगाइयों, अपराधियों, आतंकवादियों और अवैध घुसपैठियों पर कड़ी नज़र रखी जाए।

हिंसा और अपराध को रोकने के लिए सरकार और प्रशासन की एजेंसियाँ, जैसे, सेना, पुलिस, गुप्तचर, विभिन्न निगरानी व जाँच एजेंसियाँ आदि लगातार सक्रिय रहती हैं। उनकी सहायतार्थ सुरक्षा संबंधी विभिन्न तकनीकें भी तेजी से विकसित हो रही हैं। जो बड़े पैमाने के उपद्रव होते हैं उनके तो कुछ संकेत या लक्षण पहले से दिखने लगते हैं, और यदि पर्याप्त सतर्कता और तत्परता बरती गई तो उनकी रोकथाम के उपाय कर पाना संभव होता है। लेकिन छोटे स्तर के उपद्रवों के पहले से किसी प्रकार के लक्षण दिखाई नहीं पड़ते। क्या उन्हें भी तकनीक की मदद से रोका जा सकता है? ज्यादातर लोग इसका जवाब ना में देंगे क्योंकि किसी अपराधी या षडयंत्रकारी के मन में क्या चल रहा है, वह

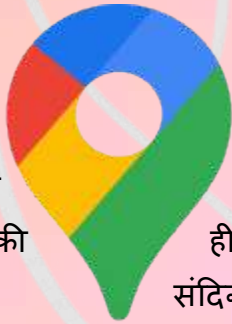
क्या खुराफात करने जा रहा है, यह कैसे जाना जा सकता है। लेकिन तकनीक जिस तेजी से विकसित हो रही है उसे देखते हुए यह चीज भी मुश्किल नहीं रह जाएगी। यों तो तकनीक की बदौलत आज करीब करीब हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की निगरानी के दायरे में है। उदाहरण के लिए, लोगों के बैंक खातों, उसमें लेन-देन, उस व्यक्ति की खरीद-फरोख्त की प्रवृत्तियों से संबंधित जानकारी, जिसे वैध-अवैध तरीकों से हासिल कर विपणन (मार्केटिंग) एजेंसियाँ उसका इस्तेमाल करती हैं; मोबाइल में किससे, कहाँ, कब, क्या बातचीत हुई इसकी टैपिंग। लेकिन इसमें नागरिक स्वतंत्रता और निजता के मामले आड़े आते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के उपयोग को सामाजिक-शासकीय-नैतिक मूल्यों और प्रावधानों के साथ संतुलन बिठाना पड़ता है। इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का वैध उपयोग आवश्यक है।

अपराध नियंत्रण के लिए निगरानी उपकरणों के क्रम में सबसे पहला स्थान सीसीटीवी का है जो सबसे छोटा और अभी भी सबसे



असरदार है। यह अपने दायरे में हो रही घटनाओं की वीडियो रिकॉर्ड कर लेता है। लेकिन अपराधी उसको चकमा देने के लिए चेहरा छुपा लेते हैं या वीडियो कैमरे को दूसरी तरफ मोड़ देते हैं या तोड़ ही देते हैं। जैसे, जेएनयू में हुई घटनाओं में उपद्रवियों ने नकाब पहन लिए थे, बंगलोर में दंगाइयों ने वीडियो कैमरों को खाली दीवारों की ओर मोड़ दिया और अतिरिक्त सावधानी के लिए उन्होंने नकाब भी पहन रखे थे। अब तो समस्या आगे बढ़ गई है कि वीडियो ही उतने विश्वसनीय नहीं रह पा रहे हैं। 'डीप फेक' टेक्नोलॉजी नकली वीडियो के धंधे में क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आई है। इस टेक्नोलॉजी से ऐसे नकली वीडियो बनने लगे हैं जिनको वास्तविक से फर्क कर पाना असंभव सा हो चला है।

तकनीक और अपराधी लगातार एक प्रतियोगिता में चलते हैं- तू डाल-डाल में पात-पात। सीसीटीवी से बचने के लिए अपराधी ने नकाब पहन लिये या दूसरी तरफ मोड़ दिया, या सीसीटीवी ही विश्वसनीयता संदिग्ध हो गई तो सहायता के लिए अगला



Google Maps

उपकरण मौजूद है- स्मार्टफोन। स्मार्टफोन का गूगल मैप्स डेटा संदिग्ध की एक-एक गतिविधि, कब-कहाँ-किस स्थान पर था वगैरह की चुगली कर देगा। बस उसे अपराधी से जब्त करने की देर होगी।

चलिए मान लेते हैं कि अपराधी ने लोकेशन ऑफ करके रखा या अपराध के दौरान फोन का उपयोग नहीं किया, या फोन को ही नष्ट कर दिया। तब अपराधी को कैसे पकड़ा जा सकेगा? अमेरिका की पेंटागन संस्था एक ऐसा उपकरण विकसित कर रही है जो दिल की धड़कन से व्यक्ति की पहचान कर सकेगा। हर व्यक्ति के दिल की धड़कन का पैटर्न अद्वितीय होता है, जैसे ही जैसे हरेक की उंगली की छाप अलग होती है। पेंटागन का यह उपकरण



इन्फ्रारेड लेजर की मदद से 200 मीटर की दूर से ही दिल की धड़कन को रिकॉर्ड कर लेगा, कपड़ों के ऊपर से ही। उसके साथ उसकी लोकेशन, समय आदि सबकुछ डेटाबेस में सुरक्षित रख लेगा। अपराधी के लिए छुपना मुश्किल होगा।

आजकल सोशल मीडिया का जमाना है। हर कोई किसी न किसी सोशल मीडिया फेसबुक, गूगल, यूट्यूब, ट्विटर आदि प्लैटफॉर्म का उपयोग करता



है। वहाँ व्यक्ति की गतिविधियाँ उसके बारे में बहुत कुछ जाहिर करती हैं। गतिविधियाँ

के आधार पर अपराधी की पहचान कर लेना, उसकी तस्वीर बना लेना या कोई अनजानी तस्वीर का सिरा पकड़कर उस व्यक्ति का सारा आगा-पीछा पता लगा लेना इसके लिए जाँच एजेंसियाँ लम्बे समय से प्रयासरत रही हैं। अब अमेरिका के ही एक स्टार्टअप द्वारा विकसित क्लियरव्यू नामक एक एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर यह सब करने में समर्थ है। तस्वीर के बल पर व्यक्ति की पहचान की सुविधा एक सीमित हद तक गूगल सर्च में भी संचर्च बाई Clearview.ai संचर्च इमेज द्वारा उपलब्ध है। क्लियरव्यू का उक्त सॉफ्टवेयर फेसबुक, यूट्यूब, वेनमो और अन्य लाखों वेबसाइटों को खंगालता है और उस तस्वीर या प्रयोक्ता से संबंधित सारी सामग्री को एक सर्चबल डेटाबेस में ले आता है। इसके लिए वह कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की मदद लेता है। अमेरिका में विभिन्न पुलिस बलों द्वारा इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है।

आँकड़ा विश्लेषण शास्त्र (डेटा एनालिटिक्स) आज एक स्वतंत्र शास्त्र का रूप का रूप ले चुका है और ज्ञान और व्यवहार के अनेकानेक क्षेत्रों में इसका उपयोग होता है। अपराध की दुनियाँ में, खासकर आर्थिक अपराधों और आतंकवादी गतिविधियों में लगे व्यक्तियों और समूहों से संबंधित तफ्तीश और रोक-थाम में इस शास्त्र का उपयोग बेहद सफलतापूर्वक किया जा रहा है। आज आधार विशिष्ट आईडी

और पैन नंबर के जरिए व्यक्ति या समूह के वित्तीय लेन-देनों को ट्रैक करना आसान हो गया है। वित्तीय लेन-देन के आँकड़ों के भंडार में डेटा एनालिटिक्स की मदद से पैटर्न की तलाश कर मनी लॉन्ड्रिंग और विदेशो से अवैध धन की आवक को पकड़ा जा रहा है। इसी से जुड़ी चीज है 'फिनटेक' (फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी) यानी वित्तीय तकनीक। आज अधिकांश वित्तीय कार्य तकनीक पर आश्रित हो गए हैं। बैंकों में कोर बैंकिंग सॉल्यूशन फिनटेक का ही उदाहरण है। नगदरहित भुगतान के लिए भीम, गूगल पे, पेटीएम आदि इसी श्रेणी में आते हैं। भारत इसको अपनाते में बहुत आगे है। यह विमुद्रीकरण के अनसुने लाभों में से एक है। स्थानीय सब्जी विक्रेता भी BHIM या पेटीएम या गूगल पे से भुगतान लेते हैं और इसका मतलब है कि हर जगह अपने डिजिटल पदचिह्न छोड़ते जाना। एक बार लेन-देन के बाद में उन पदचिहनों को मिटाना लगभग असंभव है। इन पदचिहनों के सहारे हर आर्थिक गैरकानूनी कारोबार को पकड़ा जा सकता है। बेनामी परिसंपत्तियों,



पैसों की हेरा-फेरी, काले धन को सफेद करने के दिन लद जाएंगे।

सड़कों पर टोल की वसूली के लिए फास्टैग का एक लाभ यह मिला है कि इससे वाहनों की ट्रैकिंग आसान हो गयी है। टोल भुगतान के लिए लैंप पोस्ट में लगा सेंसर आपकी गतिविधि को भी दर्ज कर लेता है। संदिग्ध वाहनों का छुपकर निकल जाना बहुत मुश्किल है। जैसे अपराधियों को उनके मोबाइल फोन के माध्यम से ट्रैक किया जाता है, वैसे ही उनके वाहनों को फास्टैग द्वारा निगरानी में रखा जा सकता है।

अब तो तकनीक को उपयोग किसी इलाके या समुदाय की निगरानी में भी किया जाना संभव होनेवाला है। एक पूरे इलाके या शहर के विशाल डेटाबेस पर एक एल्गोरिदम में मशीन लर्निंग का उपयोग करके उन इलाकों या स्थानों की भविष्यवाणी की जा सकेगी जहाँ अपराध होने की संभावना है। (इस विषय पर अंग्रेजी में एक फिल्म आई थी 'माइनॉरिटी रिपोर्ट', जिसमें प्री-क्राइम तकनीक के साथ

मनोविज्ञान का इस्तेमाल करके पूर्वानुमान लगाया जाता था कि कहाँ कोई आतंकवादी वारदात होनेवाली है।) धीरे धीरे हम सर्वव्यापी कनेक्टिविटी वाले स्मार्ट शहरों की ओर बढ़ते जा रहे हैं जहाँ इन्टरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) कार्यरत होगा और सर्वत्र एम्बेडेड संवेदकों (सेंसर्स) के नेटवर्क के

जरिए सुरक्षा अधिकारियों के पास एक एक नागरिक के एक एक क्रिया-कलाप की जानकारी होगी। कल्पना कीजिए यदि कोई सरकार बुरे इरादों से अपने नागरिकों पर इन तकनीकों का उपयोग करने लगे तो? इसलिए गोपनीयता की चिंताएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

ऐसा लगता है कि जार्ज ऑरवेल के प्रसिद्ध उपन्यास '1984' की उक्ति चरितार्थ होनेवाली है - "Big brother is watching you." लेकिन उसके पीछे राजनैतिक विचारधारा का दुराग्रह या राजनैतिक नियंत्रण की महत्वाकांक्षा न होकर जनता की सुरक्षा का उद्देश्य होगा-- दंगाइयों, अपराधियों, आतंकवादियों और



अवैध लोगों पर कड़ी नजर। और वह नजर गेस्टापो या सीक्रेट पुलिस की नहीं, खुफिया टेक्नोलॉजी की होगी।

डॉ. बरुण कुमार  
निदेशक/राजभाषा, रेलवे बोर्ड



“यह झाड़ू सीधी किसने खड़ी की? बीजी ने त्योरी चढ़ाकर विकट मुद्रा में पूछा। जवाब न मिलने पर उन्होंने मीरा को धमकाया, इस तरह फिर कभी झाड़ू की तो...”

वे कहना चाहती थीं कि मीरा को काम से निकाल देंगी पर उन्हें पता था नौकरानी कितनी मुश्किल से मिलती है। फिर मीरा तो वैसे भी हमेशा छोड़-छोड़ मुद्रा में रहती थी।

‘मैंने नहीं रखी, मीरा ने ऐंठकर जवाब दिया।

‘क्यों रखी थी! तुझे इतना नहीं मालूम कि झाड़ू खड़ी रखने से घर में दलित्दर आता है, कर्ज बढ़ता है, रोग जड़ पकड़ लेता है।

“यह तो मैंने कभी नहीं सुना।

“जाने कौन गाँव की है तू। माँ के घर से कुछ भी तो सीखकर नहीं आई। काके का काम वैसे ही ढीला चल रहा है, तू और झाड़ू खड़ी रख, यही सीख है तेरी!

मेरा खयाल है झाड़ू गुसलखाने के बीचोबीच भीगती हुई, पसरी हुई छोड़ देने से दलित्दर आ सकता है। तीलियाँ गल जाती हैं, रस्सी ढीली पड़ जाती है और गंदी भी कितनी लगती है।

“आज तो मैंने माफ़ कर दिया, फिर भी कभी झाड़ू खड़ी न मिले, समझी!”

इस बात में कोई तुक नहीं है बीजी, झाड़ू कैसे भी रखी जा सकती है।

बीजी झुंझला गई। कैसी जाहिल और ज़िद्दी लड़की ले आया है काका। लाख बार कहा था इस कुदेसिन से ब्याह न कर, पर नहीं, उसके सिर पर तो भूत सवार था।

शिखा को हँसी आ गई। बीजी अपने को बहुत सही और समझदार मानती हैं, जबकि अकसर उनकी बातों में कोई तर्क नहीं होता।

उसे हँसते देखकर बीजी का खून खौला गया।

इसे तो बिलकुल अकल नहीं, उन्होंने मीरा से कहा।

बीजी चाय पिँगी? शिखा ने पूछा।

बीजी उसकी तरफ़ पीठ करके बैठी रहीं। शिखा की बात का जवाब देना वे ज़रूरी नहीं समझतीं। वैसे भी उनका खयाल था कि शिखा के स्वर में खुशामद की कमी रहती है।

शिखा ने चाय का गिलास उनके आगे रखा तो वे भड़क गईं, वैसे ही मेरा कब्ज़ के मारे बुरा हाल है, तू चाय पिला-पिलाकर मुझे मार डालना चाहती है।





एक सादे समारोह में वे विवाह-सूत्र में बंध गए। शिखा उसकी आत्मनिर्भरता, खूबसूरती और स्वतंत्र सोच से प्रभावित हुई। तब उसे यह नहीं पता था कि प्रेम और विवाह दो अलग-अलग

शिखा ने और बहस करना स्थगित किया और चाय का गिलास लेकर कमरे में चली गई।

शिखा का शौहर, कपिल अपने घरवालों से इन अर्थों से भिन्न था कि आमतौर पर उसका सोचने का एक मौलिक तरीका था। शादी के खयाल से जब उसने अपने आस-पास देखा, तो कॉलेज में उसे अपने से दो साल जूनियर बीएससी में पढ़ती शिखा अच्छी लगी थी। सबसे पहली बात यह थी कि वह उन सब औरतों से एकदम अलग थी जो उसने परिवार और अपने परिवेश में देखी थीं। शिखा का पूरा नाम दीपशिखा था लेकिन कोई नाम पूछता तो वह महज नाम नहीं बताती, मेरे माता-पिता ने मेरा नाम गलत रखा है। मैं दीपशिखा नहीं, अग्निशिखा हूँ। वह कहती।

अग्निशिखा की तरह ही वह हमेशा प्रज्वलित रहती, कभी किसी बात पर, कभी किसी सवाल पर। तब उसकी तेज़ी देखने लायक होती। उसकी वक्तृता से प्रभावित होकर कपिल ने सोचा वह शिखा को पाकर रहेगा। पढ़ाई के साथ-साथ वह पिता के व्यवसाय में भी लगा था, इसलिए शादी से पहले नौकरी ढूँढ़ने की उसे कोई ज़रूरत नहीं थी। बिना किसी आडंबर, दहेज या नखरे के

संसार हैं। एक में भावना और दूसरे में व्यवहार की ज़रूरत होती है। दुनिया भर में विवाहित औरतों का केवल एक स्वरूप होता है। उन्हें सहमति-प्रधान जीवन जीना होता है। अपने घर की कारा में वे कैद रहती हैं। हर एक की दिनचर्या में अपनी-अपनी तरह का समरसता रहती है। हरेक के चेहरे पर अपने-अपनी तरह की ऊब। हर घर का एक दर्ता है जिसमें आपको फिट होना है। कुछ औरतें इस ऊब पर श्रृंगार का मुलम्मा चढ़ा लेती हैं पर उनके श्रृंगार में भी एकरसता होती है। शिखा अंदाज़ लगाती, सामने वाले घर की नीता ने आज कौन-सी साड़ी पहनी होगी और प्रायः उसका अंदाज़ ठीक निकलता। यही हाल लिपिस्टक के रंग और बालों के स्टाइल का था। दुःख की बात यही थी कि अधिकांश औरतों को इस ऊब और कैद की कोई चेतना नहीं थी। वे रोज़ सुबह साढ़े नौ बजे सासों, नौकरों, नौकरानियों, बच्चों, माली और कुत्तों के साथ घरों में छोड़ दी जातीं, अपना दिन तमाम करने के लिए। वही लंच पर पति का इंतज़ार, टी.वी. पर बेमतलब कार्यक्रमों का देखना और घर-भर के नाश्ते, खाने-नखरों की नोक पलक सँवारना। चिकनी महिला पत्रिकाओं के पन्ने पलटना, दोपहर को सोना, सजे हुए घर को

कुछ और सजाना, सास की जी-हुजूरी करना और अंत में रात को एक जड़ नींद में लुढ़क जाना।

कपिल के घर आते ही बीबी ने उसके सामने शिकायत दर्ज की, “तेरी बीबी तो अपने को बड़ी चतुर समझती है। अपने आगे किसी की चलने नहीं देती। खड़ी-खड़ी जबाब टिकाती है।”

कपिल को गुस्सा आया। शिखा को एक अच्छी पत्नी की तरह चुप रहना चाहिए, खासतौर पर माँ के आगे। इसने घर को कॉलेज का डिबेटिंग मंच समझ रखा है और माँ को प्रतिपक्ष का वक्ता। उसने कहा, मैं उसे समझा दूँगा, आगे से बहस नहीं करेगी।

उलटी खोपड़ी की है बिलकुल। वह समझ ही नहीं सकती” माँ ने मुँह बिचकाया।

रात, उसने कमरे में शिखा से कहा, तुम माँ से क्यों उलझती रहती हो दिन-भर! “इस बात का विलोम भी उतना ही सच है। “हम विलोम-अनुलोम में बात नहीं कर रहे हैं, एक संबंध है जिसकी इज्जत तुम्हें करनी होगी।

गलत बातों की भी!

माँ की कोई बात गलत नहीं होती।

“कोई भी इंसान परफेक्ट नहीं हो सकता।”

कपिल तैश में आ गया, तुमने माँ को इम्परफेक्ट कहा। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। तुम हमेशा ज़्यादा बोल जाती हो और गलत भी।

तुम मेरी आवाज़ बंद करना चाहते हो।

मैं एक शांत और सुरुचिपूर्ण जीवन जीना चाहता हूँ।

शिखा अंदर तक जल गई इस उत्तर से क्योंकि यह उत्तर हजार नए प्रश्नों को जन्म दे रहा था। उसने प्रश्नों को होठों के क्लिप से दबाया और सोचा, अब वह बिलकुल नहीं बोलेगी, यहाँ तक कि ये सब उसकी आवाज़ को तरस जाएँगे।

लेकिन यह निश्चय उससे निभ न पाता। बहुत जल्द कोई-न-कोई ऐसा प्रसंग उपस्थित हो जाता कि ज्वालामुखी की तरह फट पड़ती और एक बार फिर बदतमीज़ और बदजुबान कहलाई जाती। तब शिखा बेहद तनाव में आ जाती। उसे लगता घर में जैसे टॉयलेट होता है ऐसे एक टॉकलेट भी होना चाहिए जहाँ खड़े होकर वह अपना गुबार निकला ले, जंजीर खींचकर बातें बहा



**कलाकृति: शांतिलाल जोशी**

दे और एक सभ्य शांत मुद्रा से बाहर आ जाए। उसे यह भी बड़ा अजीब लगता है कि



वह लगातार ऐसे लोगों से मुखातिब है जिन्हें इसके इस भारी-भरकम शब्दकोश की ज़रूरत ही नहीं है। घर को सुचारू रूप से चलाने के लिए सिर्फ़ दो शब्दों की दरकार थी-जी और हाँजी।

“कल छोले बनेंगे?

जी छोले बनेंगे।

पाजामों के नाड़े बदले जाने चाहिए।”

हाँ जी, पाजामों के नाड़े बदले जाने चाहिए।

उसने अपने जैसी कई स्त्रियों से बात करके देखा, सबमें अपने घरबार के लिए बेहद संतोष और गर्व था।

हमारे तो ये ऐसे हैं। हमारे तो ये वैसे हैं जैसा कोई नहीं हो सकता।

हमारे बच्चे तो बिलकुल लव-कुश की जोड़ी है। हमारा बेटा तो पढ़ने में इतना तेज़ है कि पूछो ही मत। शिखा को लगता उसी में शायद कोई कमी है जो वह इस तरह संतोष में लबालब भरकर मेरा परिवार महान के राग नहीं अलाप सकती।

रातों को बिस्तर में पड़े-पड़े वह देर तक सोती नहीं, सोचती रहती, उसकी नियति क्या है। न जाने कब कैसे एक फुलटाइम गृहिणी बनती गई जबकि उसने ज़िंदगी की एक बिलकुल अगल तस्वीर देखी थी। कितना अजीब होता है कि दो लोग बिलकुल अनोखे, अकेले अंदाज़ में इसलिए नज़दीक आएँ कि वे एक-दूसरे की मौलिकता की कद्र करते हों, महज़ इसलिए टकराएँ क्योंकि अब उन्हें मौलिकता बरदाश्त नहीं।

दरअसल वे दोनों अपने-अपने खलनायक के हाथों मार खा रहे थे। यह खलनायक था रूटीन जो जीवन की

ख़ूबसूरती को दीमक की तरह चाट रहा था। कपिल चाहता था कि शिखा एक अनुकूल पत्नी की तरह रूटीन का बड़ा हिस्सा अपने ऊपर ओढ़ ले और उसे अपने मौलिक सोच-विचार के लिए स्वतंत्र छोड़ दे। शिखा की भी यही उम्मीद थी। उनकी ज़िंदगी का रूटीन या ढर्रा उनसे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली था। हर सुबह वह कॉलबेल की पहली कर्कश ध्वनि के साथ जग जाता और रात बारह के टन-टन घंटे के साथ सोता। बीजी घर में इस रूटीन की चौकीदार भी तैनात थीं। घर की दिनचर्या में ज़रा-सी भी देर-सबेर उन्हें बर्दाश्त नहीं थी। शिखा जैसे-तैसे रोज़ के काम निपटाती और जब समस्त घर सो जाता, हाथ-मुँह धो, कपड़े बदल एक बार फिर अपना दिन शुरू करने की कोशिश करती। उसे सोने में काफ़ी देर हो जाती और अगली सुबह उठने में भी। उसके सभी आगामी काम थोड़े पिछड़ जाते। बीजी का हिदायतनामा शुरू हो जाता, यह आधी-आधी रात तक बत्ती जलाकर क्या करती रहती है तू। ऐसे कहीं घर चलता है! ससुर 1940 में सीखा हुआ मुहावरा टिका देते, “अर्ली टु बेड एंड अर्ली टु राइज़ वगैरह-वगैरह। हिदायतें सही होती पर शिखा को बुरी लगतीं। वह बेमन से झाड़ू-झाड़न पोचे का रोज़नामचा हाथ में उठा लेती जबकि उसका दिमाग़ किताब, कागज़ और कलम की माँग करता रहता। कभी-कभी छुट्टी के दिन कपिल घर के कामों में उसकी मदद करता। बीजी उसे टोक देतीं, ये औरतों वाले काम करता तू अच्छा लगता है। तू तो बिलकुल जोरू का गुलाम हो गया है।”

घर में एक सहज और सघन संबंध

को लगातार ठोंक-पीठकर यांत्रिक बनाया जा रहा था। एकांत में जो भी तंमयता पति-पत्नी के बीच जन्म लेती, दिन के उजाले में उसकी गर्दन मरोड़ दी जाती। बीजी को संतोष था कि वे परिवार का संचालन बढ़िया कर रही हैं। वे बेटे से कहतीं, “तू फ़िकर मत कर। थोड़े दिनों में मैं इसे ऐन पटरी पर ले आऊँगी।”

पटरी पर शिखा तब भी नहीं आई अब दो बच्ची की माँ हो गई। बस इतना भर हुआ कि उसने अपने सभी सवालियों का रुख अन्य लोगों से हटाकर कपिल और बच्चों की तरफ़ कर लिया। बच्चे अभी कई सवालियों के जवाब देने लायक समझदार नहीं हुए थे, बल्कि लाड-प्यार में दोनों के अंदर एक तर्कातीत तुनकमिजाज़ी आ बैठी थी। स्कूल से आकर वे दिन-भर वीडियो देखते, गाने-सुनते, आपस में मार-पीट करते और जैसे-तैसे अपना होमवर्क पार लगाकर सो जाते। कपिल अपने व्यवसाय से बचा हुआ समय अखबारों, पत्रिकाओं और दोस्तों में बिताता। अकेली शिखा घर की कारा में कैद घटनाहीन दिन बिताती रहती। वह जीवन के पिछले दस सालों और अगले बीस सालों पर नज़र डालती और घबरा जाती। क्या उसे वापस अग्नि शिखा की बजाय दीपशिखा बनकर ही रहना होगा, मद्धिम और मधुर-मधुर जलना होगा। वह क्या करे अगर उसके अंदर तेल की जगह लावा भरा पड़ा है।

उसे रोज़ लगता कि उन्हें अपना जीवन नए सिरे से शुरू करना चाहिए। इसी उद्देश्य से उसने कपिल से कहा, क्यों नहीं हम दो-चार दिन को कहीं घूमने चलें।

“कहाँ?”

“कहीं भी। जैसे जयपुर या आगरा।”

वहाँ हमें कौन जानता है। फ़िज़ूल में एक नई जगह जाकर फँसना।

“वहाँ देखने को बहुत कुछ है। हम घूमेंगे, कुछ नई और नायाब चीज़ें खरीदेंगे, देखना, एकदम फ़ेश हो जाएँगे।”

ऐसी सब चीज़ें यहाँ भी मिलती हैं, सारी दुनिया का दर्शन जब टी.वी. पर हो जाता है तो वहाँ जाने में क्या तुक है?

“तुक के सहारे दिन कब तक बिताएँगे?”

बच्चों ने इस बात का मज़ाक बना लिया “कल को तुम कहोगी, अंडमान चलो, घूमेंगे।”

“इसका मतलब अब हम कहीं नहीं जाएँगे, यहीं पड़े-पड़े एक दिन दरख़्त बन जाएँगे।

तुम अपने दिमाग का इलाज कराओ, मुझे लगता है तुम्हारे हॉर्मोन बदल रहे हैं। मुझे लगता है, तुम्हारे भी हॉर्मोन बदल रहे हैं।

तुम्हारे अंदर बराबरी का बोलना एक रोग बनता जा रहा है। इन ऊलजलूल बातों में क्या रखा है?

शिखा याद करती वे प्यार के दिन जब उसकी कोई बात बेतुकी नहीं थी। एक इंसान को प्रेमी की तरह जानना और पति की तरह पाना कितना अलग था। जिसे उसने निराला समझा वहीं कितना औसत निकला। वह नहीं चाहता जीवन के ढर्रे में कोई नयापन या प्रयोग। उसे एक परंपरा चाहिए जी-हुजूरी की। उसे एक गाँधारी चाहिए जो जानबूझकर न सिर्फ़ अंधी हो

बल्कि गूँगी और बहरी भी।

बच्चों ने बात दादी तक पहुँचा दी। बीजी एकदम भड़क गई, “अपना काम-धंधा छोड़ कर काका जयपुर जाएगा, क्यों, बीवी को सैर कराने। एक हम थे, कभी घर से बाहर पैर नहीं रखा।

“और अब जो आप तीर्थ के बहाने घूमने जाती हैं वह? शिखा से नहीं रहा गया तीरथ को तू घूमना कहती है! इतनी खराब जुबान पाई है तूने, कैसे गुज़ारा होगा तेरी गृहस्थी का!

“काश गोदरेज कम्पनी का कोई ताला होता मुँह पर लगानेवाला, तो ये लोग उसे मेरे मुँह पर जड़कर चाबी सेफ़ में डाल देते, शिखा ने सोचा, “सच ऐसे कब तक चलेगा जीवन।

बच्चे शहजादों की तरह बर्ताव करते। नाशता करने के बाद जूठी प्लेटें कमरे में पड़ी रहतीं मेज़ पर। शिखा चिल्लाती, यहाँ कोई रूम सर्विस नहीं चल रही है, जाओ, अपने जूठे बर्तन रसोई में रखकर आओ।

“नहीं रखेंगे, क्या कर लोगी”, बड़ा बेटा हिमाकृत से कहता।

न चाहते हुए भी शिखा मार बैठती उसे।

एक दिन बेटे ने पलटकर उसे मार दिया। हल्के हाथ से नहीं, भरपूर घूँसा मुँह पर।

होठ के अंदर एक तरफ़ का माँस बिलकुल चिथड़ा हो गया। शिखा सन्न रह गई। न केवल उसके शब्द बंद हो गए, जबड़ा भी जाम हो गया। बर्तन बेटे ने फिर

भी नहीं उठाए, वे दोपहर तक कमरे में पड़े रहे। घर भर में किसी ने बेटे को ग़लत नहीं कहा।

बीजी एक दर्शक की तरह वारदात देखती रहीं। उन्होंने कहा, हमेशा ग़लत बात बोलती हो, इसी से दूसरे का खून खौलता है। शुरु से जैसी तूने ट्रेनिंग दी, वैसा वह बना है। ये तो बचपन से सिखानेवाली बातें हैं। फिर तू बर्तन उठा देती तो क्या घिस जाता।

उन्हीं के शब्द शिखा के मुँह से निकल गए, “अगर ये रख देता तो इसका क्या घिस जाता।”

“बदतमीज़ कहीं की, बड़ों से बात करने की अक़ल नहीं है। बीजी ने कहा।”

ससुर ने सारी घटना सुनकर फिर 1940 का एक मुहावरा टिका दिया, “एज यू सो, सो शैल यू रीप

कपिल ने कहा, पहले सिर्फ़ मुझे सताती थीं, अब बच्चों का भी शिकार कर रही हो।



शिकार तो मैं हूँ, तुम सब शिकारी हो, शिखा कहना चाहती थी पर जबड़ा एकदम जाम था। होंठ अब तक सूज गया था। शिखा ने पाया, परिवार में परिवार की शर्तों

पर रहते-रहते न सिर्फ वह अपनी शकल खो बैठी है वरन अभिव्यक्ति भी। उसे लगा वह ठूस ले अपने मुँह में कपड़ा या सी डाले इसे लोहे के तार से। उसके शरीर से कहीं कोई आवाज़ न निकले। बस, उसके



हाथ-पाँव परिवार के काम आते रहें। न निकलें इस वक्त मुँह से बोल लेकिन शब्द उसके अंदर खलबलाते रहेंगे। घर के लोग उसके समस्त रंध बंद कर दें फिर भी ये शब्द अंदर पड़े रहेंगे, खौलते और खदकते। जब मृत्यु के बाद उसकी चीर-फाड़ होगी, तो ये शब्द निकल भागेंगे शरीर से और जीती-जागती इबारत बन जाएँगे। उसके फेफड़ों से, गले की नली से, अंतड़ियों से चिपके हुए ये शब्द बाहर आकर तीखे, नुकीले, कँटीले, जहरीले असहमति के अग्रलेख बनकर छा जाएँगे घर भर पर। अगर वह इन्हें लिख दे तो एक बहुत तेज़ एसिड का आविष्कार हो जाए। फिलहाल उसका मुँह सूजा हुआ है, पर मुँह बंद रखना चुप रहने की शर्त नहीं है। ये शब्द उसकी लड़ाई लड़ते रहेंगे।

ममता कालिया  
(संकलन)

## सीख

“बेटी” तुम मेरे आँगन की शोभा हो,  
मेरी हंसी मेरी खुशी हो ।  
मोहनी मूरत में सजी बसी,  
सृष्टा की मानों मूरत हो ।  
मधुर स्वर में गूँजती हैं  
जब तुम्हारी किलकारियां,  
बज उठती है घर में वीणा के  
सात स्वरों की लोरियां ।  
छम -छम नन्हें कदमों से  
चलती हो जब घर में,  
थाप मृदंग सी बजती धरती  
डम-डम के कंपन में ।  
खिलखिलाती हो जब किसी बात में,  
धूप उतर आती है  
घर की छत से आँगन में ।  
तुम्हारे निखरे रंग की उजास,  
शीतल चाँदनी सी ठंडक  
बन फैलाती प्रकाश ।  
मन को शीतल झरने की  
निकटता देती है,  
तुम्हारी उपस्थिति मुझे  
जीवंत बना देती है ।  
प्रकृति की प्रतिबिम्ब  
सृष्टि की अनुपम कृति हो ।  
बेटी तुम मेरी हंसी,  
मेरा गौरव, मेरी खुशी हो।  
मत भटकना पाश्चात्य की राहों में,  
रखना शील संयम, औदार्य चाहों में।  
तुम लक्ष्मी हो, तुम सरस्वती हो,  
तुम शक्ति हो,  
तुम ही प्रकृति हो।

डॉ. दमयंती सैनी  
वरिष्ठ अनुवादक/राजभाषा  
विद्युत लोको शेड, इटारसी

## “मेरी बिटिया”



अच्छा हुआ बिटिया  
जो तुमने जनम लिया!

बहुत मनाने पर तो,  
तुम मेरी 'कोख' में आई।  
तुम आई तब मैंने जाना,  
कमी तुम्हारी मुझे कितनी थी।

अच्छा हुआ बिटिया,  
तुमने जो जनम लिया!  
कितना अच्छा हुआ!  
अब मेरा आंगन सुना न रहेगा तुम्हारे बिन!  
गूँजेगी किलकारियाँ तुम्हारी रात-दिन।

दो चोटियों में गूँथा,  
तुम्हारा भोला चेहरा छाया रहेगा  
मेरे घर संसार में।  
और बेटों की कलाइयाँ  
नहीं सूनी रहेंगी राखी के त्योहार में!

अच्छा हुआ बिटिया,  
जो तुमने जनम लिया!  
जो पल बिताए मैंने,  
अपनी माँ के संग  
वही पल बिताऊँगी, अब तुम्हारे संग।

अच्छा हुआ बिटिया,  
जो तुमने जनम लिया!

मेरे दुःख से दुःखी होकर,  
मेरी आँखों में आँसू देखकर  
छुप-छुपकर कितनी ही बार,  
रोई है मेरी माँ असहाय होकर!

वो घड़ी फिर से मेरे जीवन में आएगी!  
मेरी बिटिया की पीड़ा अब मुझे रुलाएगी!

पर एक समय आता है,  
जब बिटिया 'सखी' बन जाती है।  
माँ का सुख-दुख बाँटती है  
उसके आँसुओं में खुद रोती है  
उसकी गुनगुनाहटों में स्वयं गाती है।

कोई होगा मेरा अंतर्मन पढ़ने को!  
कितना अच्छा हुआ!  
जो, उस 'सखी' से वंचित नहीं रहूँगी मैं!

अच्छा हुआ बिटिया,  
जो तुमने जनम लिया!  
निकल कल्पना से बाहर,  
बस गई मेरे दिल में, मेरे संसार में।  
इसी तरह तुम आना  
जब भी आऊ मैं इस संसार में!

तुम मेरी कल्पना से उतरी परी हो,  
तुम्हारी दो चोटियाँ बनाऊँगी,  
तुम्हें गुदगुदाकर खुद भी खिलखिलाऊँगी,  
लोरियाँ सुनाकर तुम्हें रात में सुलाऊँगी,  
भोर होने पर तुम्हें चूमकर जगाऊँगी।

तुम्हें पाकर मैंने जिंदगी की हर  
कमी को भुला दिया।  
अच्छा हुआ बिटिया,  
जो तुमने जनम लिया!

अल्का सिंह परिहार,  
मेट्रो रेलवे, कोलकाता



दक्षिण प्रशान्त महासागर के मेलानेशिया में एक द्वीप देश फ़िजी जिसे आधिकारिक रूप से फ़िजी द्वीप समूह गणराज्य के नाम से जाना जाता है। यह न्यूज़ीलैण्ड के नॉर्थ आईलैंड से लगभग 2000 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसके समीपवर्ती पड़ोसी राष्ट्रों में पश्चिम की ओर वनुआतु, पूर्व में टोंगा और उत्तर में तुवालु हैं। डच एवं अंग्रेजी खोजकर्तों ने 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान फ़िजी की खोज की थी। 1970 तक फ़िजी एक अंग्रेजी उपनिवेश था।

प्रचुर मात्रा में वन, खनिज एवं जलीय स्रोतों के कारण फ़िजी प्रशान्त महासागर के द्वीपों में सबसे उन्नत राष्ट्र है। वर्तमान में पर्यटन एवं

चीनी का निर्यात इसके विदेशी मुद्रा के सबसे बड़े स्रोत हैं। यहाँ की मुद्रा फ़िजी डॉलर है। यहाँ चार आधिकारिक भाषाओं में से एक हिंदी है। नदरोगा भाषा भी यहाँ

बोली जाती है।

### फिजी और भारत

फिजी में 322 द्वीप (जिनमें से 106 बसे हुए) और 522 क्षुद्रद्वीप हैं। द्वीप समूह के दो सबसे महत्वपूर्ण द्वीप विती लेवु और वनुआ लेवु हैं। ये द्वीप उष्णकटिबंधीय वनों से आच्छादित पहाड़ी हैं, जिनमें 1300 मीटर (4250 फुट) तक की चोटियां हैं। उष्णकटिबंधीय जलवायु के कारण वर्ष भर मौसम गर्म बना रहता है। द्वीप विती लेवु में राजधानी सुवा स्थित है और यहाँ देश की लगभग तीन चौथाई



आबादी का निवास है। अन्य महत्वपूर्ण शहरों में शामिल हैं नान्दी (अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा यहाँ स्थित है) और लौतोका (एक बड़ी चीनी मिल और समुद्री-पत्तन यहाँ स्थित हैं)। द्वीप वनुआ लेवु के मुख्य

शहरों में लाबासा और सावुसावु प्रमुख हैं। अन्य द्वीप समूहों में तावेउनी और कन्दावु जो क्रमशः तीसरा और चौथा सबसे बड़ा द्वीप हैं। मामानुका द्वीप समूह (नान्दी से



थोड़ा बाहर) और यसावा द्वीप समूह लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में हैं। लोमाईविती द्वीप समूह, सुवा से बाहर है और दूरस्थ लाउ द्वीप समूह। रोटुमा, द्वीपसमूह के उत्तर में कुछ 500 किलोमीटर (310 मील) की दूरी पर स्थित है और इसे फिजी में एक विशेष प्रशासनिक दर्जा हासिल है। फिजी के निकटतम पड़ोसी टोंगा है।

### फिजी : संस्कृति और भाषा

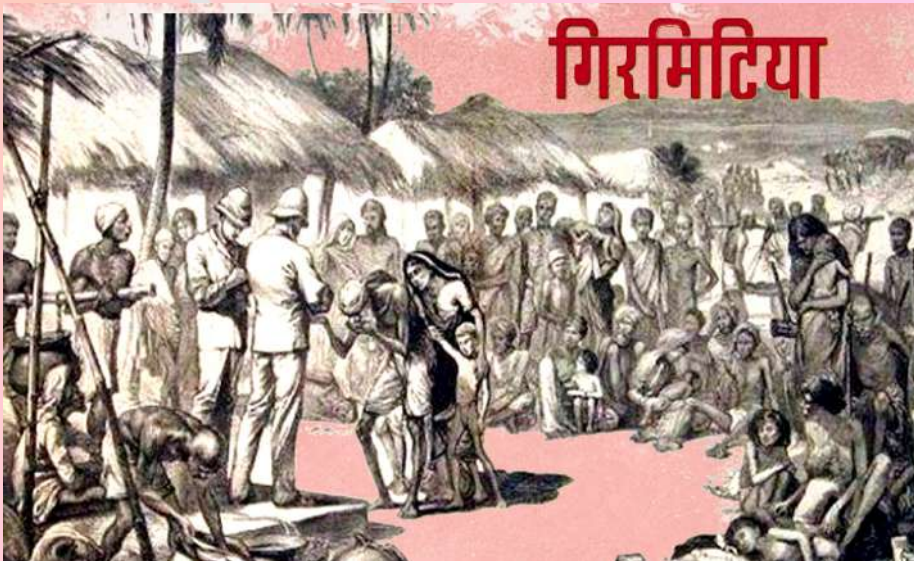
फिजी के मूल निवासी पोलिनेशियाई और मेलाशियाई लोगों का मिश्रण हैं, जो सदियों पहले दक्षिण प्रशांत के मूल स्थान से यहाँ आये थे। 1879 से 1916 के बीच यहाँ गन्ने के खेतों में काम करने के लिये ब्रितानी 61000 मजदूरों को भारत से यहाँ लाये थे इसके बाद 1920 और 1930 के दशक में हजारों भारतीय स्वेच्छा से यहां आये। आज यही गिरमिटिया भारतीय फिजी की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। फिजी के मूल निवासी पूरे देश में रहते हैं, जबकि भारतीय मूल के फिजी नागरिक दोनों प्रमुख द्वीपों के शहरी क्षेत्रों और गन्ना उत्पादक क्षेत्रों के

पास रहते हैं। स्वदेशी मूल के लगभग सभी ईसाई हैं, जिनमें दो तिहाई मथोडिस्ट है। भारतीय फ़ीजियों में 77 प्रतिशत हिंदू हैं, 16 प्रतिशत मुस्लिम, 6 प्रतिशत ईसाई के साथ कुछ सिख भी हैं।

फिजी की संस्कृति स्वदेशी, भारतीय, चीनी और यूरोपीय परंपरा का प्रचुर मिश्रण है। यहाँ कि संस्कृति अनेक पहलुओं से मिलकर बनी है, जिनमें सामाजिक व्यवस्था, परंपरा, भाषा, भोजन, वेशभूषा, विश्वास प्रणाली, वास्तुकला, कला, शिल्प, संगीत, नृत्य और खेल आदि शामिल हैं।

गिरमिटिया के रूप में पहुंचे भारतीय अवध क्षेत्र के थे। इनके पूर्वज फैजाबाद, सुल्तानपुर, जौनपुर आदि जनपदों से गए थे। इसी कारण यहाँ की भाषा अवधी के रूप में विकसित हुई है और आज स्थानीय प्रभाव के कारण फिजी हिंदी के रूप में प्रचलित है। फिजी की आधिकारिक भाषाओं में से एक फ़िजियन हिंदी या फ़िजियन हिन्दुस्तानी है। उत्तर-प्रदेश तथा बिहार की देशज भाषाओं पर आधारित भोजपुरी, जो लगभग 39.3% उत्तर भारतीय प्रवासी जुबान

थी, को बिहारी और अवधी, जो लगभग 32.9% प्रवासी जुबान थी, को पूर्वी हिन्दी कहा गया। भोजपुरी और अवधी से मुख्य रूप से व्युत्पन्न, जिसमें अन्य भारतीय भाषाओं हिन्दी, उर्दू, गुजराती, तमिल,



तेलुगु, पंजाबी और मलयालम आदि के साथ फ़िजी और अंग्रेज़ी से बड़ी संख्या में शब्द भी समाहित हैं। फ़िजियन हिंदी देवनागरी और रोमन दोनों लिपि में लिखी जाती है। फ़िजियन भारतीयों की पहली पीढ़ी, जिसने इस भाषा को बोलचाल के रूप में अपनाया इसे 'फ़िजी बात' कहते थे। लगभग 70% लोग यह भाषा बोलते हैं।

### सारांश

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 10-12 जनवरी, सन् 1975 ईसवी को नागपुर, भारत में, द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 28-30 अगस्त, सन् 1976 ईसवी को पोर्ट लुई, मॉरीशस में, तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 28-30 अक्टूबर, सन् 1983 ईसवी को नई दिल्ली, भारत में, चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 02-04 दिसंबर, सन् 1993 ईसवी को पोर्ट लुई, मॉरीशस में, पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 04-08 अप्रैल, सन् 1996 ईसवी को पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड एंड टोबैगो में, छठा विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 14-18 सितंबर, सन् 1999 ईसवी

को लंदन, यू.के. में, सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 06-09 जून, सन् 2003 ईसवी को पारामारिबो, सूरीनाम में, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 13-15 जुलाई, सन् 2007 ईसवी को न्यूयार्क, अमरीका में, नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 22-24 सितंबर, सन् 2012 ईसवी को जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में, दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 10-12 सितंबर, सन् 2015 ईसवी को भोपाल, भारत में, ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, दिनांक 18-20 अगस्त, सन् 2018 ईसवी को पोर्ट लुई, मॉरीशस में संपन्न हुआ। मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन को फिजी में आयोजित करने का निर्णय लिया गया था। उसी अनुक्रम में 12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन विदेश मंत्रालय द्वारा फिजी सरकार के सहयोग से 15 से 17 फरवरी, 2023 तक फिजी में आयोजित किया गया।

**यतीन्द्रनाथ चतुर्वेदी**  
**सदस्य हिंदी सलाहकार समिति,**  
**संस्कृति मंत्रालय**



## मोबाइल में खोई बिटिया



माँ की आँखों की प्यारी  
पापा की दुलारी मेरी बिटिया  
वो चहकती थी ऐसे जैसे  
मेरे आँगन की सोन चिरैया  
जिससे महकती थी मेरे जीवन की बगिया  
जिससे मिलती थी सुबह-शाम खुशियां  
जो सारा दिन धमा चौकड़ी मचाए रखती थी  
और बात-बात पर खिलखिलाती और हँसती थी  
अब वह देखते-देखते चुप हो गई है  
न जाने अपनी किस दुनिया में खो गई है  
समझ तो मुझे भी आ गया है  
कि उसके हाथ में मोबाइल फोन आ गया है  
जब देखो मोबाइल पर खोई रहती है,  
कभी पढ़ाई करती है  
तो कभी नेटफ्लिक्स पर वयस्त रहती है  
कभी दोस्तों से गप्पें लड़ाती है  
तो कभी फेसबुक चलाती है  
अपना आधे से ज्यादा समय  
मोबाइल पर ही बिताती है  
जो माँ के बनाए हर व्यंजन को चाव से खाती थी  
मेरी माँ जैसा कोई कुक नहीं  
सारी दुनिया को बताती थी  
अब हर चीज को देखकर नाक-भों सिकोड़ती है  
यू-ट्यूब से देखकर कुछ नया बनाओ  
अपनी माँ को ही यह हिदायत देती है  
में अब इसी उधेड़बुन में लगी रहती हूँ कि  
इस मोबाइल से बिटिया का पीछा कैसे छुड़ाऊँ  
जिसने मेरी घर की रौनक को ग्रहण लगा दिया  
वो खुशियाँ कैसे वापस लौटाऊँ?



रविबाला गुप्ता  
उपनिदेशक/राजभाषा, रेलवे बोर्ड



## धूल या फूल

ये कौन सी जगह है जहां मैं आ पड़ी हूँ  
ये कौन सा मोड़ है जहां मैं आज खड़ी हूँ।  
कहां गए वो तरु और कहां गई वो डाली,  
जाकर दूर तक नज़रें लौट आती हैं खाली।

सोचती हूँ क्यूं तरु ने जमीन पर दिया पटक,  
सोचती हूँ क्यूं डाली ने मुझको यूं दिया झटक।  
अच्छी भली मैं भी तो उस बगिया में गुलजार थी,  
कर दिया मुझको यूं दूर क्या मैं इतनी बेकार थी।

कहाँ गए दिन-रात हसाँने और रूलाने वाले  
कहाँ गए चिरकर छाती दिखाने वाले।  
कहते थे गम न कर हम तुम्हारे साथ हैं,  
दूढ़ती हूँ मगर अब कहाँ वो हाथ हैं।

मेरे आँसुओं में जिनके नैन थे रोते,  
जगाकर मुझे सुना है वो चैन से हैं सोते।  
अब मेरे आँसुओं को पोछने वाला कौन है?  
रोने की खातिर अपना कंधा देने वाला कौन है?

वाह रे विधाता तूने खूब है रीत बनाई,  
किसी से दिया मिलन तो किसी से दे दी जुदाई।  
सोचती हूँ जाने कैसा दुनिया का दस्तूर है,  
एक अजनबी है पास और सारे अपने दूर हैं।

ए अजनबी क्या कहूँ? अब तेरा ही साथ है,  
छुड़ाकर उंगली अपनों ने थमा दिया तेरा हाथ है।  
टूट आ गिरा है दामन में तेरे फूल,  
बनाले हार गले का अपने या मार दे ठोकर, समझ कर मुझको धूल।

जितेन्द्र प्रधान  
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, रेलवे बोर्ड

## आत्मबल

नम्रता नाम था उसका तीखे नैन नक्श वाली यही कोई उन्नीस वर्ष की अवस्था रही होगी, पिताजी ने बेटी को ग्रामीण परिवेश की वजह से ज्यादा नहीं पढ़ाया और बेटी के हाथ पीले करने के लिए प्रयास करने आरंभ कर दिए, पिताजी की छोटी सी किराने की दुकान थी उन्होंने नम्रता को बारहवीं तक की शिक्षा जैसे तैसे दिलाई थी हालांकि नम्रता भी बला की खूबसूरत थी इसलिए उसके शादी के अनेकों संबंध आने लगे थे पिताजी ने नम्रता का विवाह पास के गांव में ही अच्छे खाते-पीते परिवार में कर दिया किंतु नम्रता तो और अधिक पढ़ना चाहती थी।

शादी के बाद नम्रता ने अपने पति को अपनी इच्छा के बारे में बताया कि वह और अधिक पढ़ना-लिखना चाहती है, पति ने नम्रता की इच्छा में सहमति प्रदान की, साथ ही कहा कि वह माता-पिता से पूछ कर उसका प्रवेश उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज में करा देगा।

अगले दिन सुबह सभी परिवार के लोग चाय पी रहे थे, नम्रता किचन में थी, नम्रता के पति संजय ने अपने माता-पिता से नम्रता की उच्च शिक्षा के बारे में पूछा ! तो माताजी ने तत्काल ही कहा कि बेटा लोग क्या कहेंगे ? कि हम लोग अपनी बहू का खर्चा नहीं उठा पा रहे हैं, इसीलिए बहू

को पढ़ाना चाहते हैं ताकि उसे नौकरी मिल सके और तो और आस-पड़ोस और रिश्तेदार भी हमारा मजाक बनाएंगे ! माता जी की बात में पिताजी भी हां में हां मिलाते हुए नजर आए, अब तो संजय असमंजस में पड़ गया था कि वह नम्रता को क्या जवाब देगा? लेकिन उसने मन ही मन कुछ निर्णय कर दिया था इसके बाद माता-पिता की बात सुनकर वह शांति से उठकर नम्रता के पास आ गया।

संजय ने माता-पिता के निर्णय के बारे में नम्रता को बताया तब नम्रता को काफी निराशा महसूस हुई लेकिन वह क्या करती ईश्वर इच्छा मानकर शांत रह गई। संजय ने नम्रता को बताया कि वे दोनों अभी गांव को छोड़कर अन्य किसी शहर में जाकर रहेंगे ताकि तुम अपनी शिक्षा प्राप्त कर सको, नम्रता ने जब यह सुना तो वह आश्चर्यचकित हो गई तब उसने पति से प्रश्न किया कि हम लोग वहां अपना खर्चा-पानी कैसे उठाएंगे! संजय ने कहा कि तुम इसकी चिंता मत करो, मेरे पास कुछ जमा राशि है जो कि पिताजी ने मुझे दी थी जिससे मैं अपना छोटा-मोटा व्यवसाय कर लूंगा ताकि घर का मासिक खर्च निकल सके।

अगले दिन सुबह संजय ने अपने माता-पिता को बताया कि आप लोग सही कह रहे हैं



इस ग्रामीण परिवेश में दकियानूसी सोच के कारण नम्रता का कॉलेज में प्रवेश कराने की वजह से सभी नातेदार-रिश्तेदार एवं आस-पड़ोस वाले लोग हमारे बारे में अनाप-शनाप बातें बनाएंगे, मजाक बनाएंगे इसलिए हम लोग इस घर को छोड़कर जा रहे हैं, जब नम्रता की शिक्षा पूरी हो जाएगी तब हम वापस आ जाएंगे, ऐसा सुनकर माता-पिता अवाक रह गए लेकिन बिना कुछ कहे संजय को स्वीकृति में सिर हिला कर सहमति दे दी।

संजय एवं नम्रता ने अपना सामान पैक कर लिया और ट्रेन पकड़ कर दूसरे शहर में चले गए, संजय ने वहां जाकर एक छोटा सा मकान किराए पर लिया, अब सबसे बड़ा प्रश्न था कि घर का खर्च कैसे चले? नम्रता को पढ़ाने के लिए क्या किया जाए? नम्रता ने जब संजय के माथे पर चिंता की लकीरें देखी तो हिम्मत बनाते हुए बोली आप चिंता ना करें, मेरे पास कुछ जेवर हैं इन्हें बेच कर कुछ राशि मिल जाएगी, जिससे हम लोग छोटा-मोटा काम करेंगे, साथ ही पढ़ाई भी करेंगे, संजय ने जब नम्रता की यह बात सुनी तो उसने मन ही मन सोचा, ईश्वर ने मेरे भाग्य में जो भी लिखा हो लेकिन अब मैं अपनी पूरी मेहनत से अपनी पत्नी को जरूर पढ़ाऊंगा, इसके बदले मुझे कितनी भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े ऐसा सोचकर संजय गहरी निद्रा में चला गया।

अगले दिन सुबह नम्रता जल्दी जाग गई एवं संजय के लिए नाश्ता एवं खाना तैयार कर दिया तो संजय ने कहा आज हम सबसे पहले तुम्हारा प्रवेश कॉलेज में करा देंगे,

इसके बाद ही कुछ काम पर निकलेंगे, इस तरह संजय ने नम्रता का प्रवेश कॉलेज में करा दिया और स्वयं छोटा सा व्यवसाय आरंभ कर दिया जिसमें वह शहर के दुकानदारों से आर्डर लेता और बड़े शहरों में जाकर माल लाकर दुकानदारों को सप्लाई करता इस वजह से संजय को माह में तीन-चार बार दिल्ली-मुंबई जाना पड़ता, इस प्रकार उसकी आमदनी ठीक-ठाक होने लगी और घर का खर्च आसानी से निकलने लगा। समय अपनी गति से चलता रहा अब नम्रता ने पति के सहयोग से अपनी पढ़ाई जारी रखी इस वर्ष नम्रता का स्नातक की पढ़ाई का अंतिम वर्ष था उसने अपने पति से कहा कि वह राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में शामिल होना चाहती है, इसलिए वह कोचिंग करना चाहती है लेकिन फिर उसने कोचिंग की भारी-भरकम फीस के बारे में सोचा तब उसने अपने पति से कहा कि वह जब भी दिल्ली जाए तब कुछ प्रतियोगी परीक्षा की किताबें लाकर दे और नम्रता ने किताबों की सूची संजय को सौंप दी साथ ही कहा वह स्वयं ही स्वाध्याय करेगी, संजय ने कहा कि वह अगले हफ्ते में माल लेने दिल्ली जाएगा तब वह सभी किताबें ले आएगा, संजय समझ गया था कि पैसों की कमी के कारण नम्रता ने कोचिंग जाने का विचार त्याग दिया था तब संजय ने मन ही मन सोचा कि वह कुछ अधिक मेहनत करेगा, इससे कुछ धनराशि एकत्रित कर लेगा तब वह नम्रता को प्रतियोगी परीक्षा की कोचिंग भी करवा देगा, इसी भाग-दौड़ में संजय ने और अधिक मेहनत शुरू कर दी लेकिन एक दिन संजय

जल्दी माल सप्लाई करने के चक्कर में एक कार से टकरा गया जिससे उसे काफी चोट आ गई, बाजार के दुकानदारों ने संजय को तत्काल ही सरकारी अस्पताल में पहुंचा दिया जैसे ही यह



खबर नम्रता को मिली वह बेसुध हो गई और दौड़ती-भागती अस्पताल में पहुंची, संजय के पैर में फैंक्चर हुआ था डॉक्टर ने प्लास्टर लगा दिया था एवं दो माह तक किसी भी प्रकार का कार्य करने से मना किया था जब नम्रता ने यह सुना तो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई वह बहुत ज्यादा दुःखी हो गई किंतु ईश्वर के निर्णय को बेमन से स्वीकार कर, सरकारी एंबुलेंस से पति को लेकर अपने घर पर आ गई। अब नम्रता ने सोचा कि वह क्या करे? किस से मदद ले? उसने सोचा यदि सास ससुर को बताएं तो वह भी बहुत नाराज होंगे तब उसने निर्णय लिया कि वह स्वयं कुछ काम करेगी एवं अपने पति की देखभाल करेगी तथा बचे हुए समय में अपनी पढ़ाई करेगी।

नम्रता ने एक कोचिंग सेंटर में जाकर बात की, और बताया कि वह पढ़ाना चाहती है, इसके बाद संचालक महोदय ने नम्रता के ज्ञान की परीक्षा ली तब कोचिंग संचालक महोदय नम्रता की बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने नम्रता को अपनी कोचिंग में नौकरी दे दी, नम्रता की

स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा आने वाली थी साथ ही पति की देखभाल एवं इन सब समस्याओं से तालमेल बिठाते हुए नम्रता ने अपनी परीक्षाएं दी और अपने पति की देखभाल भी काफी अच्छी तरह से की, धीरे-धीरे संजय की तबियत में भी काफी सुधार हो रहा था किंतु अभी वह पूर्व की भांति अपना कार्य करने में असमर्थ थे।

नम्रता ने एक दिन कोचिंग संचालक जी को बताया कि वह राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा देना चाहती है इस हेतु उसे कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं की किताबों की जरूरत है तो संचालक महोदय जी ने कहा! अरे! मेरे पास तो किताबों और नोट्स का भंडार है, मैंने अनेक वर्षों राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी की है किंतु मेरा अंतिम रूप से चयन नहीं हो पाया था अब मैं तुम्हारा मार्गदर्शन भी करूंगा तथा तुम्हें सभी प्रकार के मैटेरियल एवं नोट्स उपलब्ध करा दूंगा, आज नम्रता समझ गई थी ईश्वर का निर्णय सदैव हमारे लिए हितकारी होता है और उसने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया क्योंकि प्रतिकूल परिस्थितियां मानव को मजबूत बनाने के लिए होती हैं।

आज नम्रता का स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा का परिणाम आ गया था जो कि उसने प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर ली थी अब नम्रता ग्रेजुएट हो गई थी एवं पति का स्वास्थ्य भी काफी अच्छा हो गया था वह अपने काम पर जाने लगे थे इस प्रकार घर

की परिस्थितियां अनुकूल होने लगी थी।

नम्रता ने राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी में अपना दिन-रात एक कर दिया था उसने आयोग की लिखित परीक्षा को पास कर लिया था एवं साक्षात्कार की तैयारी के लिए उसके पति संजय ने उसे एक कोचिंग में प्रवेश दिला दिया था निश्चित तिथि को नम्रता का साक्षात्कार हो गया और अब परीक्षा परिणाम आने वाला था नम्रता के मन में काफी उथल-पुथल मची हुई थी। संजय नम्रता से बार-बार कहता कि तुम्हारी मेहनत बेकार नहीं जाएगी ईश्वर "श्रम का फल" अवश्य देंगे, ऐसा कहकर वह नम्रता को ढांडस बनाता, इसी प्रकार की बातें चल रही थी तभी संजय के मोबाइल पर घंटी बजी, यह फोन नम्रता के कोचिंग संचालक जी का था उन्होंने कहा कि संजय जी! क्या नम्रता मैडम से मेरी

बात हो सकेगी? बात में गजब उत्साह था! संजय ने कहा हां! क्यों नहीं! और फोन नम्रता को दे दिया, तब संचालक महोदय ने कहा! मैडम आपने 'इतिहास' पढ़ाते-पढ़ाते "इतिहास" बना दिया है! आपने राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में प्रदेश की प्रावीण्य सूची में सातवां स्थान प्राप्त किया है! जब नम्रता ने यह सुना! तो उसका गला अवरुद्ध हो गया नेत्रों से अश्रु की अवरिल धार बह निकली! और उसने भावुक होते हुए अपने पति संजय के चरण स्पर्श किए और संजय को अपनी सफलता की बात बताई!

संजय ने नम्रता को गले से लगा लिया और वह भी काफी भावुक हो गया!

अगले दिन के समाचार पत्रों में नम्रता एवं संजय के प्रेम तथा त्याग की कहानी छपी हुई थी इस घटना ने सिद्ध कर दिया था कि कितनी भी परेशानियां हो! कितनी भी समस्याएं हों! आप अपने लक्ष्य के लिए निष्ठा एवं लगन से लगे रहेंगे तो "आत्मबल" की वजह से आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

जब संजय के माता-पिता तथा अन्य



रिश्तेदारों को यह बात पता चली तब सभी लोग नम्रता एवं संजय से मिलने शहर आए आज वे सभी समझ गए थे कि 'शिक्षा की ताकत क्या है! इसके बाद संजय के गांव में जो भी बहू-बेटियां स्कूल कॉलेज में अपनी इच्छा के बावजूद प्रवेश नहीं ले पा रही थी अब सभी अभिभावक अपनी बहू-बेटियों को शिक्षित करने के लिए जागरूक हो गये थे, अब वे सभी शिक्षा के महत्व को समझ गये थे।

**जलज कुमार गुप्ता**  
नियंत्रक/परिचालन/पश्चिम मध्य रेलवे





## आकाश में उन्मुक्त होके उड़ान भरने दो !!

मातृत्व की कौपलें पल्लवित होने से प्रफुल्लित माता के गर्भ में दस्तक दे चुकी बालिका का जीव आनंदित है, उत्साहित है, जीवन की आशाओं से। किंचित आशंकित भी है अपने जन्म से। ये संशय की स्थिति बालिका भ्रूण के साथ ही उपज आती है, स्वमेव ही, अमरबेल ही पसरती जाती है। फिर भी अंग-उपांगों के वर्धन के साथ अबोध जीव सत्यता से परे, कल्पनाओं की रचना में संकुचित स्थल में प्रसन्नता से अठखेलियां कर रही है। एक निष्ठुर प्रहार घात बन अस्तित्व की संभावनाओं को कब नकार दे, समाप्त कर दे, नियत नहीं है। इसके बाद भी आराधना सी निर्मल, इबादत सी पाक एक नन्हीं मासूम अपनी किलकारियों से आंगन में खिलखिलाने को आतुर है। गर्भ से आकाश तक का सफर उसके लिए आसान क्यों नहीं है? सदियों, शताब्दियों से एकपक्षीय इम्तिहान जारी क्यों है? इसके समापन की आखिरी तिथि कब है? काल कवलित होने के सिलसिले का खात्मा आखिर कब? बेटियों को जीवन अमृत प्रदान कर जन्म देके धरा पर प्रस्फुटित होने दें फिर देखिए अपनी अदम्य दक्षता से विश्व के आकाशपटल पर गौरव का परचम किस तरह लहराती हैं।

*नारी निन्दा ना करो, नारी रतन की खान।  
नारी से नर होत है, ध्रुव प्रह्लाद समान।*

कबीर दास जी के मतानुसार नारी की निंदा नहीं करनी चाहिए। नारी अनेक रत्नों की खान है। इतना ही नहीं नारी से ही पुरुष का जन्म होता है। ऐसे में ध्रुव और प्रह्लाद नारी की ही देन है।

*बेटा और बेटियां  
समाज के हैं अभिन्न अंग  
इन दोनों के बिना ही  
हर समाज है अपंग*

भारत के गौरवशाली इतिहास और विकास की गाथा में कदम से कदम मिलाते हुए नारियों के अभूतपूर्व योगदान इस तथ्य के परिचायक हैं कि उन्हें खिलने दिया गया है, बढ़ने दिया गया जिसकी सौंधी सुगंध, आज भी फिज़ा में बिखरी हुई है और भारत की ये धरा उनके ओज से आज भी आलौकिक हो रही है। कुछ ऐसी ही नारियों का वर्णन किया जा रहा है जो आज भी प्रेरणा दे रही हैं -

**दुर्गा बाई देशमुख- भारत की "आयरन लेडी"**  
भारत के स्वतंत्रता सेनानी और स्वतंत्र

भारत के पहले वित्त मंत्री चिंतमणि देशमुख की धर्मपत्नी किसी परिचय की मोहताज नहीं। विलक्षण प्रतिभा की धनी 15 जुलाई 1909 को आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी जिले के काकीनाडा में जन्मी दुर्गाबाई देशमुख ने 14



दुर्गाबाई  
देशमुख  
भारत  
की "आयरन  
लेडी"

वर्ष की उम्र में ही आज़ादी के समर में शामिल हो गईं। बचपन में ही पिता श्री रामाराव का साया सिर से उठने के बाद अपनी माता कृष्णवेनम्मा की परवरिश में वह पली बढ़ीं। नमक सत्याग्रह में बढ़चढ़कर भाग लिया, उन्हें 1 वर्ष की जेल भी हुई, लेकिन उन्होंने हार न मानी। आंध्र प्रदेश में नारियों के उत्थान के लिए कई संस्थाओं और प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना इन्होंने करवाई। आज़ादी के बाद योजना आयोग द्वारा प्रकाशित भारत में समाज सेवा का विश्वकोश भी इन्हीं के निर्देशन में तैयार हुआ। साथ ही इन्होंने कानून की पढ़ाई कर महिलाओं के हक के लिए काफी लड़ाई लड़ीं। तो वहीं साक्षरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए इन्हें यूनेस्को पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इनके द्वारा स्थापित किए गए पारिवारिक न्यायालय आज भी नारियों, बच्चों और परिवार के हक के लिए कार्य कर रहे हैं।

### कैप्टन लक्ष्मी सहगल- भारतीय राष्ट्रीय सेना में महिला रेजीमेंट कमांडर

24 अक्टूबर 1914 को मद्रास में जन्मी लक्ष्मी सहगल, राजनीति में किसी भी बड़े पद पर रहकर कार्य कर सकती थीं क्योंकि

उनके पिता डॉ. एस स्वामीनाथन हाईकोर्ट के वकील थे और मां एवी अम्मुकुट्टी स्वतंत्रता सेनानी थीं, लेकिन उन्होंने सुभाष

चंद्र बोस की आज़ाद हिंद फौज का हिस्सा बनना स्वीकार किया। रानी झांसी रेजिमेंट में लक्ष्मी सहगल



को कर्नल की जिम्मेदारी सौंपी गई। लेकिन लोग उन्हें कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नाम से जानते हैं। एमबीबीएस होने के कारण दिसंबर 1984 में हुए भोपाल गैस कांड के मरीजों और पीड़ितों को चिकित्सीय सहायता प्रदान की। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आंदोलन में भी इन्होंने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इनकी याद में कानपुर में लक्ष्मी सहगल इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनाया गया।

### सरोजिनी नायडू - भारत की कोकिला

भारत की कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में

हुआ। इनके पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक वैज्ञानिक थे। भारत की स्वतंत्रता के लिए विभिन्न



आंदोलनों में इन्होंने भाग लिया। जलियांवाला बाग हत्याकांड से दुखी होकर इन्होंने कैसर ए हिंद का सम्मान लौटा दिया था। भारतीय समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ

भारतीय महिलाओं को इन्होंने हमेशा जागृत किया। जिसके चलते भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनीं। वे आगे चलकर एक सफल कवियत्री के रूप में जानी गईं। वे एक कुशल राजनेता होने के साथ-साथ एक अच्छी लेखिका भी थीं। मात्र 13 वर्ष की आयु में इन्होंने 1300 पंक्तियों की कविता द लेडी आफ लेक लिख डाली थी।

### कादम्बिनी गांगुली- साउथ एशिया की पहली महिला चिकित्सक

18 जुलाई 1961 को बिहार के भागलपुर में जन्मी कादम्बिनी गांगुली चिकित्सा शास्त्र की डिग्री लेने वाली प्रथम महिला थीं। इनके पिता बृजकिशोर बासु ने अपनी पुत्री की शिक्षा पर हमेशा ध्यान



दिया। ब्रिटिश समय में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा भले ही मुश्किल भरी रही हो लेकिन उसी समय कादम्बिनी ने भारत ही नहीं

अपितु साउथ एशिया की पहली चिकित्सा डिग्री धारक महिला के रूप में विश्व प्रसिद्ध हुईं। इतना ही नहीं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन और बंकिम चंद्र चटर्जी की रचनाओं से प्रभावित होकर कादम्बिनी ने सामाजिक कार्यों में सक्रियता दिखाई, जिसके चलते इन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सबसे पहले भाषण देने वाली महिला का

गौरव प्राप्त है। तो वहीं इन्होंने कोयला खदानों में काम करने वाली महिलाओं के हित में भी आवाज उठाई। देश के प्रति उनका लगाव हर भारतीय के लिए एक प्रेरणा है।

### भीखाजी कामा - जर्मनी में भारतीय झंडा लहराने वाली प्रथम महिला

'भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है। एक महान

देश भारत के हितों को इससे क्षति पहुंच रही है। आगे बढ़ो हम हिंदुस्तानी हैं और हिंदुस्तान हिंदुस्तानियों का है।' ऐसे विचारों से ओत-प्रोत



भारतीय मूल की पारसी नागरिक भीखाजी कामा का जन्म 24 सितंबर 1861 को मुंबई में हुआ। इन्हें जर्मनी के स्टटगार्ट नगर में सातवीं अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस के दौरान भारतीय झंडा लहराने का श्रेय दिया जाता है। एक धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद इन्होंने सुखी जीवन की इच्छाओं का त्याग कर देश को अंग्रेजी शासन से आजाद करने में अपना जीवन बिता दिया। इसलिए इन्हें भारतीय राष्ट्रियता की महान पुजारिन कहा जाता है। ये जहां गईं, इन्होंने वहां जाकर भारतीय स्वाधीनता की अलख जलाई और स्वराज के लिए लोगों को एकजुट किया। लेकिन असीम सेवाभाव के चलते प्लेग रोगियों की सेवा करते हुए 73 वर्ष की आयु में हमने इस महान स्वतंत्रता सेनानी को खो दिया।

### सुचेता कृपलानी - भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री

जून 1908 में पंजाब के अंबाला शहर में जन्मी सुचेता कृपलानी भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी थीं। उनके राजनीतिक जीवन का सफर आसान न था, क्योंकि



पिता की मृत्यु के बाद उन पर घर परिवार की जिम्मेदारी आ गई थी। लेकिन भारत की स्वतंत्रता के बाद में वह राजनीति में सक्रिय हो गईं। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में इतिहास की प्रवक्ता के तौर पर भी कार्य किया। कांग्रेस से अलग होने के बाद उन्होंने अपनी किसान मजदूर पार्टी बनाई और 1962 में विधानसभा का चुनाव लड़ा और वह उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बन गईं। सुचेता उन महिलाओं में से हैं जो गांधी जी के काफी करीब रहीं और कई आंदोलनों ने उन्होंने भाग लिया और कई बार जेल की सजा भी काटी।

### रानी कित्तूर चैनम्मा - ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व

भारत के कर्नाटक राज्य में रानी चैनम्मा का नाम बड़े ही अदब से लिया



जाता है। कर्नाटक के बेलगाम के पास ककती नामक गांव में जन्मी रानी चैनम्मा ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

से पहले ही अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरंदाजी में पारंगत रानी चैनम्मा ने अकेले ही अंग्रेजी शासकों के प्रति विद्रोह की घोषणा कर दी थी। लेकिन वह अधिक समय तक अंग्रेजों से लोहा नहीं संभाल पाई और 21 फरवरी 1829 को अंग्रेजों से लड़ाई के दौरान वीरगति को प्राप्त हुईं।

### रानी अहिल्याबाई होल्कर - बहादुर रानी, कुशल शासक

”ईश्वर ने मुझे जो जिम्मेदारी सौंपी है, उसे मुझे निभाना है। साथ ही हर उस कार्य के लिए मैं जिम्मेदार हूं। मुझे उसका जवाब ईश्वर को देना है।” अपने परिवार के 27 लोगों को खोने के बाद भी इस नारी शासिका ने प्रजा और सत्ता की बागडोर को बखूबी संभाला।



शिव भक्त अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 में हुआ था। हालांकि इनके पिता मानकोजी शिंदे एक साधारण व्यक्ति थे, लेकिन इनका विवाह इंदौर के संस्थापक मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडेराव के साथ हुआ था। ऐसे में अहिल्याबाई अपने ससुर से राजकाज की शिक्षा लिया करती थीं। जिसने उन्हें आगे चलकर एक शासिका के रूप में प्रसिद्ध कर दिया। इन्होंने अपने शासनकाल में प्रजा के हित के लिए हमेशा कार्य किया। तो वहीं अहिल्याबाई होल्कर ने सदैव अपने शासन की रक्षा के लिए सेना को अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रखा। बच्चों

और महिलाओं की स्थिति को लेकर हमेशा चिंतन करने वाली महारानी अहिल्याबाई ने देश के विभिन्न स्थानों और नगरों में मंदिरों, धर्मशालाओं और अन्नसत्रों का निर्माण करवाया। साथ ही यातायात के विकास के लिए कई जगहों पर सड़कों और रास्तों का निर्माण कराया। इतना ही नहीं 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर की स्थापना का श्रेय भी महारानी अहिल्याबाई होल्कर को दिया जाता है। लेकिन राज्य का भार और अपनों से बिछड़ने का दुख उनसे सहन नहीं हो पाया, जिसके चलते 13 अगस्त 1795 को उनकी मृत्यु हो गई।

### रजिया सुल्तान - मुस्लिम समाज की पहली महिला शासिका

इल्तुतमिश की पुत्री रजिया सुल्तान मुस्लिम समाज की पहली महिला शासिका थीं। जिन्हें पर्दा प्रथा का त्याग कर पुरुषों की तरह खुले मुंह राजदरबार में जाना पसंद था। पिता की मृत्यु के बाद रजिया को दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बनाया गया। रजिया प्रारंभ से ही नीति और शासन विद्या में पारंगत थीं, जिसके चलते उन्होंने जन कल्याण से जुड़े कई कार्यों को अंजाम दिया।



### सावित्री बाई फुले - भारत की प्रथम शिक्षिका और समाज सुधारिका

भारत की प्रथम शिक्षिका और समाज सुधारिका के रूप में जाने वाली सावित्री बाई

फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ। जिन्होंने अपने पति ज्योतिराव गोविंदराव



फुले के साथ महिला अधिकारों के प्रति आवाज बुलंद की। साथ ही इन्होंने बालिकाओं के लिए अलग विद्यालय की

स्थापना को श्रेय दिया जाता है। अपने गुरु महात्मा ज्योतिबा के सानिध्य में सावित्री बाई ने विधवा विवाह कराना, छुआछूत मिटाना, दलित महिलाओं को शिक्षित करना अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना लिया था। इतना ही नहीं स्कूल जाते वक्त जब लोग उन पर कीचड़ और पत्थर फेंका करते थे तो वह स्कूल पहुंचने के बाद अपनी साड़ी बदल लिया करती थीं। ऐसे में हमें उनके चरित्र से निरंतर प्रयासरत रहने की प्रेरणा भी मिलती है तो वहीं एक आदर्श कवियत्री के रूप में भी जानी जाती है। मानवता का संदेश देने वाली सावित्री बाई फुले का निधन प्लेग मरीजों की देखभाल के दौरान 10 मार्च 1897 को हो गया था, लेकिन उनके कार्य और विचार आज भी महिलाओं को उनके हक और अधिकारों के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार हमारे इतिहास में कई ऐसी बेटियों के उदाहरण हैं, जिन्होंने सिर्फ नारी वर्ग के लिए ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को अपने जीवनकाल से एक महत्वपूर्ण संदेश और प्रेरणा दी।

श्रीमती ममता जैन,  
सहायक शिक्षिका  
जबलपुर(म.प्र.)

## बनन में, बागन में, बगरयो बसंत है



प्राकृतिक रमणीयता की दृष्टि से भारत षडऋतुओं की अभिनव क्रीड़ास्थली है। प्रत्येक ऋतु की कमनीय कान्ति नवोद्घा नायिका की भाँति उसका नित नूतन नवल श्रृंगार करती है। ये सभी ऋतुएँ देवलोक की अप्सराओं की तरह अपनी मादक रुनझुन के साथ पृथ्वी-लोक में अवतरित होती हैं। अपने मनमोहक हास-विलास और अठखेलियों के साथ जनमानस की चेतना को झकझोरती हुई ये ऋतुएं समय के चक्र को गति प्रदान करती हैं। प्रकृति के परिवर्तन के इस चक्रीय क्रम में वसन्त ऋतु को ऋतुराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है। यह अपने में अनुपम, अप्रमेय और अभिनव है। इसमें जहां एक ओर भूमि अपनी उर्वरा शक्ति के साथ बीजों को नवांकुर प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर पादप, लताएँ और वृक्षों की डालियाँ कोमल कोपलों, नई नवेली कलियों तथा फूलों के भार से थोड़ा-सा झुक कर मानों ऋतुराज के चरणों में अपनी विनम्र प्रगति निवेदित करती हैं जिनका अवलोकन हृदय में अंकुरित भावनाओं को स्वर, लय व ताल में आबद्ध कर जनमानस को गुनगुनाने एवं गाने के लिए विवश कर देता है। भ्रमरों के गुंजन में, कोयल की कूक में और पपीहे की

हूक में एक ऐसी काव्य-धारा फूटती हुई परिलक्षित होती है जो संपूर्ण मानवता को प्रेमोन्माद में सराबोर होकर उसमें अवगाहन करने हेतु आमंत्रण देती है। रसिक जन वसंत ऋतु में इन मादक स्वर-लहरियों का आनन्द प्राप्त करते हैं और ऋतुराज की गौरव-गरिमा का गुणगान करते हैं।

सागर (मध्य प्रदेश) में जन्में रीतिकालीन कवियों में प्रमुख कवि पद्माकर का भावाकाश अत्यधिक विस्तृत एवं नक्षत्रिकाओं से परिपूर्ण है, जो वसंत ऋतु की सर्वव्यापकता और उसके मोहक सौन्दर्य को जन-जन तक पहुंचाता हुआ दृश्यमान होता है:-

कुलन में केलि में कछारन में कुंजन में  
क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत है  
कहैं पद्माकर परागन में पौनहू में  
पानन में पीक में पलासन पगंत है  
द्वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में  
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है  
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में  
बनन में बागन में बगरयो बसंत है

राष्ट्र कवि सोहन लाल द्विवेदी विभिन्न प्रतिकों के माध्यम से वसंत के

आगमन का उद्घोष करते हैं। उनकी कविता में जहां एक ओर बौराई हुई आम्र-मंजरी की गंध वासंती उन्माद उत्पन्न करती है वहीं दूसरी ओर प्रेमोन्यत नायिका



फूली हुई सरसों के रंग की पीली साड़ी पहने हुए और बेला की गंध-सी महकती वसंत के स्वागत हेतु उत्सुक प्रतीत होती है:-

आया वसंत आया वसंत  
छाई जग में शोभा अनन्त  
सरसों खेतों में उठी फूल  
बौरा आमों में उठी झूल  
बेला में फूले नए फूल  
पल में पतझड़ का हुआ अंत  
आया वसंत आया वसंत

छायावाद के आधार-स्तंभ जयशंकर प्रसाद ने वसंत के परिवर्तनपरक एवं सृजनात्मक दोनों ही पक्षों का चित्रण किया है। उनके काव्य में प्रकारांतर से वसंत को विषपायी शिव की भाँति जहां एक ओर ग्रीष्म श्रुतु से उत्पन्न होने वाले कालकूट विष को पान करते हुए दिखाया गया है वहीं दूसरी ओर पादप लताओं में नवंकुरों एवं

पुष्पों का सृजन करते हुए उसके रचनात्मक स्वरूप का दिग्दर्शन भी कराया गया है:-

चिर वसंत का यह उद्गम है  
पतझर होता एक ओर है

अमृत, हलाहल यहां मिले हैं  
सुख-दुःख बंधते एक छोर हैं

छायावादी और उत्तर-छायावादी काव्य-धारा के पुरोध महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी कविता में प्रकृति के नवल श्रृंगार और मादक रमणीयता को परिलक्षित करके उसे

वसंत के आगमन की सूचना माना है। जब मायामय प्रकृति के नवल श्रृंगार और मादकर रमणीयता को परिलक्षित करके उससे वसंत के आगमन की सूचना माना है। जब मायामय प्रकृति परिवर्तित रूप-श्रृंगार के साथ वसुधा पर अवतरित होती है तब वसंत के आमन का स्वर्णिम क्षण होता है:-

लता मुकुल हार गंध भार भर  
बही पवन बंद मंद मंदतर  
जागी नयनों में बन  
यौवन की माया  
सखि वसंत आया

प्रगतिवादी काव्य-धारा के प्रमुख कवि केदारनाथ अग्रवाल को वसंती बयार से लहलहाता प्रकृति का कण-कण हास-विलास में तल्लीन प्रतीत होता है। उनको संपूर्ण सृष्टि वसंतागमन से प्रमुदित होकर

जनमानस को नवचेतना प्रदान करती हुई वसंती लहर में उल्लसित होती हुई लगती है:-

हँसी जोर से मैं  
हँसी सब दिशाएं  
हँसे लहलहाते हरे खेत सारे  
हँसी चमचमाती भरी धूप प्यारी  
वसंती हवा में हँसी सृष्टि सारी  
हवा हूं हवा में वसंती हवा हूं

स्वरूप पर मंत्रमुग्ध होकर नए भाव-जगत की सृष्टि करता है:-

रंग-बिरंगी खिली-अधखिली  
किसिम-किसिम की  
गंधों-स्वादों वाली  
ये मंजरियां  
तरण आम की डाल-डाल  
टहनी-टहनी पर झूम रही हैं

छायावाद के पुरोधाओं में से एक और प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाने वाले सुमित्रानंदन पंत ने वसंत को पूर्णतः नवीन दृष्टि से देखा है। कवि ने एक रहस्यमय ढंग से ऋतुराज का प्राकट्य मानते हुए इस परिवर्तनशील संसार में कुसुमाकर के विराट् स्वरूप का सर्वथा मौलिक चित्रण किया है:-

दीप्त दिशाओं के वातायन  
प्रीति सांस-सा मलय समीरण  
चंचल नील नवल भू यौवन  
फिर वसंत की आत्मा आयी  
आम्र मौर में गूंथ स्वर्ण कण  
किंशुक को कर ज्वाल वसन तन

प्रयोगवाद के आधार-स्तंभ और तार सप्तक के संपादक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को वसंत ऋतु सोते से जगाती है। मलयज का झोका उनके लिए संदेश वाहक का कार्य करता है। उनके भीतर का कवि भाव-गगन में उड़ते-उड़ते कुछ पलों के लिए विश्रान्ति का अनुभव करता है तभी अचानक वसंत ऋतु के आलोड़न से अंतर में नवचेतना का उन्मेष होता है और उनका रोम-रोम पुलकित हो कह उठता है कि जागो वसंत आ गया:-

मलयज का झोका बुला गया  
खेलते से स्पर्श से

प्रगतिवादी काव्य-धारा के संवाहक प्रख्यात कवि नागार्जुन यद्यपि नई कविता के प्रवक्ता हैं तथापि वसंत के आते ही उनका प्रकृति-प्रेम भी जागृत हो जाता है। वसंती सौन्दर्य की इस मधुर वेला में कवि आम्र-मंजरी के इठलाते हुए





रोम-रोम को कंपा गया  
जागो-जागो  
जागो सखि वसंत  
आ गया जागो

ऋतुराज वसंत की अनुपम छटा जहां एक ओर संयोग और वियोग को पोषित करती है वहीं दूसरी ओर प्रकृति के कण-कण में सौंदर्य का मादक घोल अभिसिंचित करके एक उत्तेजक वातावरण को जन्म देती है जिसमें संपूर्ण सृष्टि के नर एवं नारी कहे जाने वाले दो जीव कहीं मिलन के आनंद का तो कहीं वियोग की व्यथा दंश झेलते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। यह मिलन और वियोग ही सृष्टि के क्रम को गतिशील बनाए रखता है। बुंदेलखंड के सुप्रसिद्ध लोक कवि ईसुरी की नायिका अपनी सहेली के समक्ष विरहजन्य व्यथा का वर्णन करते हुए कहती है कि यत्र-तत्र-सर्वत्र मादकता बिखेरती हुई वसंत ऋतु आ गई है और ऐसे में बिरहा (लोक-साहित्य की एक विद्या का गायन उसके हृदय पर आघात कर रहा है। ऐसी मनमोहक ऋतु के होते हुए भी मेरे प्रियतम परदेस चले गए हैं इस स्थिति में मैं किसके सहारे जीवन व्यतित करूं -

रित बसंत लागी सखी, बिरहा कर रए चोट  
पिया गए परदेस को, करो कौन की ओट

राष्ट्रवादी सांस्कृतिक काव्य-धारा की प्रमुख कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने वसंत के आगमन का चित्रण क्रान्ति-बेला के

उद्घोष के रूप में किया। कवयित्री ने जब इस गीत का सृजन किया था इस समय देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन चल रहे थे। ऐसी स्थिति में उन्होंने उदात्त भावों से परिपूर्ण इस क्रांतिकारी गीत की रचना की थी। वस्तुतः श्रृंगार रस की परिपक्वता वीरत्व पर निर्भर है। इसी को साकार करते हुए वसुधा वधू वीर नायक को रिझाने के लिए अपना मादक श्रृंगार करती है:-

फूली सरसों ने दिया रंग  
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग  
वधू-वसुधा पुलकित अंग-अंग  
है वीर देश में किंतु कंत  
वीरों का कैसा हो वसंत?

वास्तविकता तो यह है कि वसंत ऋतु में सुकुमार प्रकृति एक नव यौवना युवती की भांति प्रकट होती है। यह सुकुमार प्रकृति जहां एक ओर जनमानस को सौंदर्यबोध कराने के साथ उसके रोम-रोम में आनंद भर देती है वहीं दूसरी ओर जीवन के शास्वत मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष करने वाले वीर सपूतों को नयी शक्ति आशा और नवचेतना प्रदान करती है। अतः साहित्यकार ने वसंत का दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण और सफल चित्रण किया है जो आज भी उर-वीणा के तारों को झंकृत करते हुए सृजन की गति प्रदान करता है।

डॉ. राजेश हजेला  
सलाहकार (राजभाषा)  
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, फरुखाबाद

दिनांक 14.12.2022 को पूर्व अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री वी. के. त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 145वीं बैठक की झलकियां।



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा किए गए विभिन्न रेल कार्यालयों एवं संस्थानों में राजभाषा निरीक्षणों के दृश्य।



दिनांक 14.02.2023 को संयुक्त निदेशक, राजभाषा, श्री रिसाल सिंह द्वारा रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में राजभाषा निदेशालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी कार्यशाला के दृश्य।



राजभाषा निदेशालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम की कुछ झलकियां।  
(दिनांक-07.02.2023)



अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस



## प्रजासत्ताक भारत की बेटियां

समस्त भारतवर्ष में 26 जनवरी को एक ही गूंज सुनाई देती है, सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, गणतंत्र दिवस जो होता है हमारा, इसी दिन भारतवर्ष की समस्त प्रजा को सत्ता मिली थी, किन्तु गहन अध्ययन और विमर्श करने के पश्चात यह महसूस हुआ कि भारतवर्ष की तमाम प्रजासत्ताक स्त्रियाँ आज भी कैद में, अंग्रेजों के नहीं अपने ही प्रजासत्ताक पिता से, प्रजासत्ताक भाई से, प्रजासत्ताक पतिदेव से, और यहाँ तक अपनी उपेक्षित माँ से भी।

भारतवर्ष को "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" क्यों कहा जाता है, क्योंकि भारतवर्ष में बेटी नहीं जन्म लेती जन्म लेती हैं साक्षात् लक्ष्मी माता, "पहली बेटी धन की पेटि" हाँ वही ऐसा ही कुछ कहा जाता है न? बेटी के पैदा होते ही पड़ोसियों को दस्त लग जाते हैं। समस्त पिता बैल हो जाते हैं। जुआर रख जाता है कंधे पर। वे भार से झुक जाते हैं।

उपेक्षित समाज में जन्मी उपेक्षित बेटी का नाम अपेक्षा रखा जाता है, बेटी धान की खेतों की तरह बड़ी होने लगती है, उत्तरायन से बहती हुई पुरवाई उसके सीने पे आँचल लगा देती है माँ-पिता की आँखों में

भाई जितनी ही ममता वह अपने लिए तलाशती है किन्तु ममता के स्नेहिल नाम पर सहानुभूति ही पाती हैं। वह घृणा नहीं कर पाती अपने भाई से किन्तु चिढ़ जाती है अपने ही कलेजे के भीतर।

बेटी का शरीर स्वचलित यंत्र की तरह स्वयं ही जल्दी बढ़ जाता है तारुण्यावस्था की निशानियाँ सीने पर उभरती हैं पिता माँ को कनखियों से देखते हैं इशारों में डपटते हैं। कैसी माँ हो बेटी अभी तक चुनरी भी नहीं सँभाल पाती....!

बेटी की आत्मा नम हो जाती है, जवानी चाँद की तरह पौर्णिमा अवस्था में पदार्पित होती है ऐसी अवस्था में बेटी के अंतःकरण में कोई चाँद की तरह छा जाता है किन्तु उसका पिता सभ्य हैं। दहाड़ते नहीं हैं, मारते नहीं हैं, बेटी से अपने तथाकथित प्रेम की कुर्बानी चाहते हैं!

वह जानती है कि बस कैदखाना बदल जाएगा कैदखाने का पर्यवेक्षक भी बदल जाएगा। फिर भी उसे सज़ा याफ़ता कैदी ही बने रहना है ताउम्र। बेटी फिर भी हर उम्र के हर मोड़ पर बचा ले जाती है स्वयं को। वह छोटी पेंसिल के पीछे किसी पुरानी कैप को लगाकर लिखती है और

सबसे सुंदर आलेख वाला कप घर लाती है। वह बिना ट्यूशन के भी कन्या विद्यालय में प्रथम आती है किन्तु उच्च शिक्षा उसके भाइयों के लिए सुरक्षित रखी जाती है। यूँ भी अच्छे घरों की बेटियाँ विश्वविद्यालय नहीं ससुराल जाती हैं!

प्रेम पर लिखी सबसे सुन्दरतम



कविताओं को गंगा में बहा देने के पश्चात भी, वह बच्चे के नाम में प्रेमी को बचा लेती है वह अपने हिस्से के लिए वंचित है वह हक के लिए गिड़गिड़ाती है। बेटी ने जब भी कुछ चाहा बचा हुआ पाया, बचे हुए में भी सतत अधूरा पाया, वह कहीं पूरी नहीं है। आपके सभ्य समाज की सबसे सभ्य गालियों में भी नहीं।

प्रजासत्ताक भारत की बेटियाँ, आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाना चाहती हैं।

संतोष कुमार  
नर्सिंग अधीक्षक  
मंडल रेल चिकित्सालय भोपाल,  
पश्चिम मध्य रेलवे

### डर किस बात का

डर किस बात का.....॥  
डर किस बात का  
असफलता से डरें  
या प्रयास ही न करें.....॥  
डर किस बात का,  
कोई देख लेगा या टोक देगा,  
लेकिन क्या बिगाड़ लेगा.....॥  
डर किस बात का,  
शिखर पर नहीं पहुंचेंगे न,  
हम फिर से प्रयास कर लेंगे.....॥  
डर किस बात का,  
कि वोह बलवान है,  
लेकिन वक्त हमारे साथ है.....॥  
डर किस बात का,  
निश्चय भर नहीं हो रहा है,  
बाकी तो जीतना मुश्किल नहीं है....॥

-शैलेन्द्र कपिल

### "गज़ल: बेटी"

जिस दिन से विदा होकर बेटी चली गई  
उस दिन से मेरे घर की रौनक चली गई।

नुकसान है नफा है, या ये है रस्में दुनिया  
मेरे लिए तो घर की , दौलत चली गई।

रोज़ा-नमाज़ वक्त से,हर दिन कुराने पाक  
बेटी के साथ घर की, इबादत चली गई।

बेटी बड़ी हुई तो, फुर्सत मिली थी मां को  
बेटी गई तो मां की, ताकत चली गई ।

बेटी से घर पिता का,बसता कहां "सलीम"  
ये कह के जिन्दगी की, हकीकत चली गई।

सलीम खान,  
वरिष्ठ लोको पॉयलट



(1)

"कल होली है।"

"होगी।"

"क्या तुम न मनाओगी?"

"नहीं।"

"नहीं?"

"न ।"

"क्यों? "

"क्या बताऊं क्यों?"

"आखिर कुछ सुनूं भी तो ।"

"सुनकर क्या करोगे? "

"जो करते बनेगा ।"

"तुमसे कुछ भी न बनेगा ।"

"तो भी ।"

"तो भी क्या कहूँ?"

"क्या तुम नहीं जानते होली या कोई भी त्योहार वही मनाता है जो सुखी है। जिसके जीवन में किसी प्रकार का सुख ही नहीं, वह त्योहार भला किस बिरते पर मनावे? "

"तो क्या तुमसे होली खेलने न आऊँ? "

"क्या करोगे आकर?"

सकरुण दृष्टि से करुणा की ओर देखते हुए नरेश साइकिल उठाकर घर चल दिया ।

करुणा अपने घर के काम-काज में लग गई।

(2)

नरेश के जाने के आध घंटे बाद ही करुणा के पति जगत प्रसाद ने घर में प्रवेश

किया। उनकी आँखें लाल थीं। मुंह से तेज शराब की बू आ रही थी। जलती हुई सिगरेट को एक ओर फेंकते हुए वे कुरसी खींच कर बैठ गये। भयभीत हिरनी की तरह पति की ओर देखते हुए करुणा ने पूछा- "दो दिन तक घर नहीं आए, क्या कुछ तबीयत खराब थी? यदि न आया करो तो खबर तो भिजवा दिया करो। मैं प्रतीक्षा में ही बैठी रहती हूँ।"

उन्होंने करुणा की बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया। जब से रुपये निकाल कर मेज़ पर ढेर लगाते हुए बोले- "पंडितानी जी की तरह रोज़ ही सीख दिया करती हो कि जुआ न खेलो, शराब न पीयो, यह न करो, वह न करो। यदि मैं, जुआ न खेलता तो आज मुझे इतने रुपये इकट्ठे कहाँ से मिल जाते? देखो पूरे पन्द्रह सौ है। लो, इन्हें उठाकर रखो, पर मुझ से बिना पूछे इसमें से एक पाई भी न खर्च करना समझीं?"

करुणा जुए में जीते हुए रुपयों को मिट्टी समझती थी। गरीबी से दिन काटना उसे स्वीकार था। परन्तु चरित्र को भ्रष्ट करके धनवान बनना उसे प्रिय न था। वह जगत प्रसाद से बहुत डरती थी इसलिए अपने स्वतंत्र विचार वह कभी भी प्रकट न कर सकती थी। उसे इसका अनुभव कई बार हो चुका था। अपने स्वतंत्र विचार प्रकट करने के लिए उसे कितना अपमान, कितनी लांछना और कितना तिरस्कार सहना पड़ा



था। यही कारण था कि आज भी वह अपने विचारों को अन्दर ही अन्दर दबा कर दबी हुई ज़बान से बोली- "रुपया उठाकर तुम्हीं न रख दो? मेरे हाथ तो आटे में भिड़े हैं।" करुणा की इस इनकारी से जगत प्रसाद क्रोध से तिलमिला उठे और कड़ी आवाज से पूछा-- क्या कहा?"

करुणा कुछ न बोली नीची नजर किए हुए आटा सानती रही। इस चुप्पी से जगत प्रसाद का पारा एक सौ दस डिग्री पर पहुंच गया। क्रोध के आवेश में रुपये उठा कर उन्होंने फिर जेब में रख लिये- "यह तो मैं जानता ही था कि तुम यही करोगी। मैं तो समझा था इन दो-तीन दिनों में तुम्हारा दिमाग ठिकाने आ गया होगा। ऊट-पटांग बातें भूल गई होगी और कुछ अकल आ गई होगी। परन्तु सोचना व्यर्थ था। तुम्हें अपनी विद्वत्ता का घमंड है तो मुझे भी कुछ है। लो! जाता हूँ अब रहना सुख से "कहते-कहते जगत प्रसाद कमरे से बाहर निकलने लगे।

पीछे से दौड़कर करुणा ने उनके कोट का सिरा पकड़ लिया और विनीत स्वर में बोली- "रोटी तो खा लो मैं रुपये रखे लेती हूँ। क्यों नाराज होते हो?" एक जोर के झटके के साथ कोट को छुड़ाकर जगत प्रसाद चल दिये। झटका लगने से करुणा पत्थर पर गिर पड़ी और सिर फट गया। खून की धारा बह चली, और सारी जाकेट

लाल हो गई।

( 3 )

संध्या का समय था। पास ही बाबू भगवती प्रसाद जी के सामने बाली चौक से सुरीली आवाज आ रही थी।

"होली कैसे मनाऊं?"

"सैया बिदेस, मैं द्वारे ठाढ़ी, कर मल मल पछताऊं।"

होली के दीवाने भंग के नशे में चूर थे। गाने वाली नर्तकी पर रुपयों की बौछार हो रही थी। जगत प्रसाद को अपनी दुखिया

पत्नी का खयाल भी न था। रुपया बरसाने वालों में उन्हीं का सब से पहिला नम्बर था। इधर करुणा भूखी-प्यासी छटपटाती हुई चारपाई पर करवटें बदल रही थी।

"भाभी, दरवाजा खोलो" किसी ने बाहर से आवाज दी। करुणा ने कष्ट के साथ उठकर दरवाजा खोल दिया।

देखा तो सामने रंग की पिचकारी लिए हुए नरेश खड़ा था। हाथ से पिचकारी छूट कर गिर पड़ी। उसने आश्चर्य से पूछा-

"भाभी यह क्या?"

करुणा की आँखें छल छला आईं, उसने रूंधे हुए कंठ से कहा-

"यही तो मेरी होली है, भैया।"

सुभद्रा कुमारी चौहान

(संकलन)

# राष्ट्रीय बालिका दिवस

## बेटी है तो कल है



भारत में हर साल 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस (National Girl Child Day) मनाया जाता है। 24 जनवरी 1966 को इंदिरा गांधी ने भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी, अतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने 24 जनवरी को महिला सशक्तिकरण के रूप में चुना था। बालिका दिवस को मनाने का उद्देश्य, समाज को बालिकाओं की स्थिति से अवगत कराना है।

### राष्ट्रीय महिला दिवस

13 फरवरी भारत का राष्ट्रीय महिला दिवस है। सरोजिनी नायडू भारत की प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी व कवयित्री हैं। उन्हें भारत कोकिला यानी नाइटिंगेल ऑफ इंडिया भी कहा जाता है। इतना ही नहीं वह आजाद भारत की पहली महिला राज्यपाल भी रही हैं। सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हुआ था। उनके कार्यों और महिलाओं के अधिकारों के लिए उनकी भूमिका को देखते हुए 2014 से सरोजिनी नायडू के जन्मदिन के मौके पर राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है।

### अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन एक श्रम आंदोलन था, जिसमें 1908 न्यूयॉर्क शहर में 15 हजार महिलाओं

ने काम के घंटे कम करने, बेहतर वेतन और वोट देने की माँग के साथ विरोध प्रदर्शन निकाला था।

एक साल बाद अमेरिकी सोशलिस्ट पार्टी ने पहली बार राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरुआत की। क्लारा जेटकिन ने 1910 में कॉपेनहेगन में आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ वर्किंग वीमेन में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव दिया था। इसके बाद से ही 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन होता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कैंपेन के मुताबिक, "बैंगनी रंग न्याय और गरिमा का सूचक है। हरा रंग उम्मीद का रंग है। सफ़ेद रंग को शुद्धता का सूचक माना गया है। ये तीनों रंग 1908 में ब्रिटेन की वीमेंस सोशल एंड पॉलिटिकल यूनियन (डब्ल्यूएसपीयू) ने तय किए थे।"

इस वर्ष का थीम "डिजिटऑल: लैंगिक समानता के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी" (DigitALL: Innovation and technology for gender equality) था। इस थीम के पीछे यह विचार है कि: लैंगिक समानता प्राप्त करने और सभी महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए डिजिटल युग में नवाचार और तकनीकी परिवर्तन और शिक्षा।

संकलन

## ""प्रथम""



## भारतीय महिला

- पहला महिला विश्वविद्यालय-महर्षि कर्वे ने साल 1916 में पुणे में पांच छात्रों के साथ एसएनडीटी विश्वविद्यालय शुरू किया था।
- पहली केंद्रीय विदेश मंत्री एवं दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री - सुषमा स्वराज
- नोबेल शांति पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला-मदर टेरेसा (1979)
- माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला-बछेंद्री पाल (1984)
- बुकर पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय महिला-अरुंधति रॉय (1997)
- 'मिस वर्ल्ड' बनने वाली पहली भारतीय महिला-रीता फारिया
- पहली महिला राजदूत-मिस सी.बी. मुथम्मम
- माउंट एवरेस्ट पर दो बार चढ़ने वाली पहली महिला-संतोष यादव
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष-एनी बेसेंट
- किसी भारतीय राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री-श्रीमती सुचेता कृपलानी
- संघ लोक सेवा आयोग की प्रथम महिला अध्यक्ष-रोजे मिलियन बेटू
- पहली महिला पुलिस महानिदेशक (DGP)- कंचन चौधरी भट्टाचार्य
- पहली महिला लेफ्टिनेंट जनरल-पुनीता अरोड़ा
- पहली महिला एयर वाइस मार्शल-पी. बंदोपाध्याय
- इंडियन एयरलाइंस की पहली महिला चेयरपर्सन-सुषमा चावला
- दिल्ली की पहली और अंतिम मुस्लिम महिला शासक-रजिया सुल्ताना
- अशोक चक्र प्राप्त करने वाली पहली महिला-नीरजा भनोट
- इंग्लिश चैनल पार करने वाली पहली महिला-आरती साहा
- भारत रत्न पाने वाली पहली महिला-इंदिरा गांधी
- ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला-आशापूर्णा देवी
- अंटार्कटिका पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला -महला मूसा
- अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की पहली भारतीय महिला सदस्य -नीता अंबानी
- सात महाद्वीपीय चोटियों पर चढ़ाई करने वाली पहली भारतीय महिला पर्वतारोही-प्रेमलता अग्रवाल
- माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली दिव्यांग महिला-अरुणिमा सिन्हा
- माउंट एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली जुड़वां बहनें-ताशी और नैन्सी मलिक
- लंदन की रॉयल सोसायटी में साथी के रूप में चुना गई पहली भारतीय महिला

वैज्ञानिक -गगनदीप कंग

- भारत की पहली महिला रक्षा मंत्री एवं पहली महिला वित्त मंत्री- श्रीमती निर्मला सीतारमण
- संयुक्त राष्ट्र की अध्यक्ष एवं पहली महिला राजदूत-विजय लक्ष्मीपंडित
- पहली दृष्टिहीन महिला आईएएस अधिकारी -प्रांजल पाटिल
- भारतीय तटरक्षक में पहली महिला डीआईजी-नूपुर कुलश्रेष्ठ
- पहली महिला मुख्य चुनाव आयुक्त-श्रीमती वी. एस रमा देवी
- पहली महिला कैबिनेट मंत्री- राजकुमारी अमृत कौर
- भारत की पहली महिला ग्रेजुएट-कादम्बनी गांगूली
- भारत की पहली महिला डॉक्टर-आनंदीबाई जोशी
- भारत की पहली महिला आईपीएस अधिकारी-किरण बेदी
- भारत की पहली महिला सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीश-एम फातिमा बीवी
- भारत की पहली महिला लोकसभा स्पीकर-मीरा कुमार
- भारत की पहली महिला शिक्षक एवं हेड मिस्ट्रेस-सावित्री बाई फुले
- अंतरिक्ष में जाने वाली देश की पहली भारतीय मूल की महिला-कल्पना चावला
- भारत प्रथम महिला राष्ट्रपति व राजस्थान की प्रथम महिला राज्यपाल- प्रतिभा पाटिल
- पहली महिला आदिवासी राष्ट्रपति -द्रौपदी मुर्मू

-संकलन

## काश! मेरी भी बिटिया होती.....

न जाने कितने सजदे किये और लिखी कितनी चिट्ठियाँ दो प्यारे बेटे तो दिए उसने पर नहीं दी एक बिटिया घर आंगन महक जाता है उसके आने से नहीं कोई चाहत रहती है बाकि फिर ज़माने से

जब वो चलती तो खनकती उसकी पायल है उसकी सादगी के तो हर माँ- बाप कायल है उसका बचपन अठखेलियाँ लेता है और कहता उसके इर्द गिर्द ही मेरा संसार रहता जब वो बड़ी होकर मेरे साथ रहती नहीं हूँ मैं बेटे से कम ऐसा कहती

फिर वो दिन भी आता जब होते उसके हाथ पीले और हमारे दामन खुशी के आंसुओ से हो जाते गीले बेटे माँ- बाप की आन बान शान होती है उसके होने से ही जिन्दगी आसन होती है

उसके न होने की कमी मुझे आज भी खलती है सच ही कहा है किसी ने बिटिया किस्मत वालों को ही मिलती है बिटिया किस्मत वालों को ही मिलती है.....

नीतेश कुमार सोने  
सहायक वाणिज्य प्रबंधक, जबलपुर, प.म.रे



“मध्यम वर्ग” का होना भी किसी वरदान से कम नहीं है। कभी बोरियत नहीं होती। जिंदगी भर कुछ ना कुछ आफत लगी ही रहती है।

मध्यम वर्ग की स्थिति सबसे दयनीय होती है, इन्हे तैमूर जैसा बचपन नसीब होता है, न अनूप जलोटा जैसा बुढ़ापा, फिर भी अपने-आप में उलझते हुए व्यस्त रहते हैं। मध्यम वर्ग होने का भी अपना फायदा है चाहे बीएमडब्ल्यू का भाव बढ़े या ऑडी का या फिर आई-फोन लांच हो जाए, कुछ फर्क नहीं पड़ता।

मध्यम वर्ग लोगों की आधी जिंदगी तो झड़ते हुए बाल और बढ़ते हुए पेट को रोकने में ही चली जाती है। इनके घरों में पनीर की सब्जी तभी बनती है, जब दूध गलती से फट जाता है और मिक्स-वेज की सब्जी भी तभी बनती है जब रात वाली सब्जी बच जाती है। इनके यहाँ फ्रूटी, ठंडा पेय एक साथ तभी आते हैं, जब घर में कोई बढ़िया वाले रिश्तेदार आ रहे होते हैं।

मध्यम वर्ग वालों के कपड़ों की तरह खाने वाले चावल की भी तीन वेराइटी होती है। डेली, कैजुवल और पार्टी वाला। छानते

समय चायपती को दबा कर अन्तिम बून्द तक निचोड़ लेना ही मध्यम वर्ग वालों के लिए परमसुख की अनुभूति देता है।

ये लोग रूम फ्रेशनर का इस्तेमाल नहीं करते, सीधे अगरबत्ती जला लेते हैं। मध्यम वर्ग भारतीय परिवार के घरों में “गेट टुगेदर” नहां होता, यहाँ “सत्यनारायण भगवान की कथा” होती है।

मध्यम वर्ग लोगों की आधी जिंदगी तो “बहुत महँगा है” बोलने में ही निकल जाती है। इनकी “भूख” भी होटल के रेट्स पर डिपेंड करती है, दरअसल महंगे होटलों की मेन्यू-बुक में मध्यम वर्ग इंसान ‘फूड-आइटम्स’ नहीं बल्कि अपनी “औकात” ढूँढ रहा होता है।

इश्क-मोहब्बत तो अमीरों के चोचलें हैं, मध्यम वर्ग वाले तो “ब्याह” करते हैं। इनके जीवन में कोई वैलेंटाइन नहीं होता, “जिम्मेदारियाँ” जिंदगी भर बजरंग-दल सी पीछे लगी रहती हैं।

मध्यम वर्गीय दूल्हा-दुल्हन भी मंच पर ऐसे बैठे रहते हैं, मानो जैसे किसी भारी सदमे में हो। अमीर शादी के बाद हनीमून पर चले जाते हैं और मिडिल क्लास लोगों

की शादी के बाद टेन्ट और बर्तन वाले ही हैं।  
इनके पीछे पड़ जाते हैं।

मध्यम वर्ग बंदे को पर्सनल बेड और है "टंकी भर गई है, मोटर बंद करना है"।  
रूम भी शादी के बाद ही अल्ट हो पाता है।  
मध्यम वर्ग बस ये समझ लो कि जो तेल सर पे लगाते है वही तेल मुँह पर भी रगड़ लेते हैं।

एक सच्चा मध्यम वर्ग आदमी गीजर बंद करके तब तक नहाता रहता है, जब तक कि नल से ठंडा पानी आना शुरू ना हो जाए। रूम ठंडा होते ही एसी बंद करने वाला मध्यम वर्ग आदमी चंदा देने के वक्त नास्तिक हो जाता है और प्रसाद खाने के वक्त आस्तिक।

दरअसल मध्यम वर्ग तो चौराहे पर लगी घण्टी के समान है, जिसे लूली-लंगड़ी, अंधी-बहरी, अल्पमत-पूर्णमत हर प्रकार की सरकार पूरा दम से बजाती है। मध्यम वर्ग को आजतक बजट में वही मिला हैं जो अक्सर हम मंदिर में बजाते हैं। फिर भी हिम्मत करके मध्यम वर्ग आदमी पैसा बचाने की बहुत कोशिश करता हैं लेकिन बचा कुछ भी नहीं पाता। हकीकत में मध्यम वर्ग की हालत पंगत के बीच बैठे हुए उस आदमी की तरह होती है, जिसके पास पूड़ी-सब्जी चाहे इधर से आये, चाहे उधर से, उस तक आते-आते खत्म हो जाती



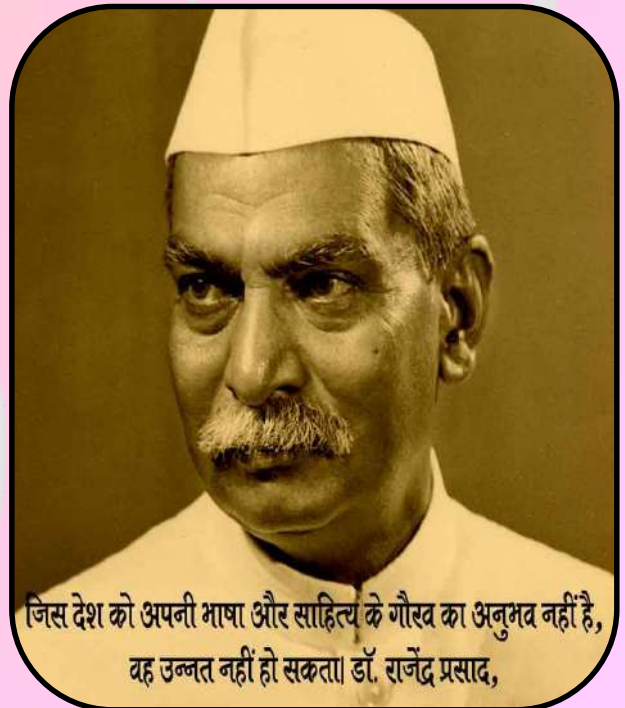
मध्यम वर्ग के सपने भी लिमिटेड होते

गैस पर दूध उबल गया है, चावल जल गया है, इसी टाईप के सपने आते है।

दिल में अनगिनत सपने लिए बस चलता ही जाता है, चलता ही जाता है।

कृपया अन्यथा न लीजिए। मैं स्वयं भी मध्यम वर्ग से ही हूँ। सिर्फ आनन्द के लिए है। आनन्द उठाइये और मुस्कुराइए।

शंकर कुमार  
व्याख्याता, बहु विषयक प्रशिक्षण संस्थान,



जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद,

## वो खुशनसीब हैं

वो खुशनसीब हैं कि  
जिनके घर हैं बेटियाँ।  
बेटों से किसी तरह  
न कमतर हैं बेटियाँ।  
मत कैद कर के रखो  
इनको घरों के अंदर-  
अब दुनिया को बदल रही  
पढ़कर हैं बेटियाँ।  
मुश्किल वतन पे आए  
तो तलवार उठाकर-  
आती वो लक्ष्मीबाई  
सी बढ़कर हैं बेटियाँ।  
बचेन्द्री पाल की तरह  
जो मौका मिले तो-  
चढ़ जातीं अब एवरेस्ट  
के ऊपर हैं बेटियाँ।  
वो कल्पना चावला सी  
अन्तरिक्ष में जाती।  
हिम्मत में कई लोगों  
से बढ़कर हैं बेटियाँ।  
पर लोगों के दुःख देखकर  
आती हैं ले के प्यार।  
मरियम कभी टेरेसा सी  
बनकर हैं बेटियाँ।  
नहीं हैं बोझ ये कि  
इनसे जग हुआ रौशन।  
दौलत जहाँ की धरती  
का जेवर हैं बेटियाँ।

डॉ. अनुराग माथुर  
चक्रधरपुर, दक्षिण पूर्व रेलवे

## सेवानिवृत्तियां



श्री शिवनाथ प्रसाद एवं श्रीमती रेखा शर्मा, सहायक निदेशक/राजभाषा लगभग 37 साल की रेल सेवा के पश्चात् 28.02.23 को सेवानिवृत्त हुए। अपनी सेवा के दौरान उन्होंने हिंदी के प्रयोग-प्रसार में सराहनीय योगदान दिया। उनके आगामी जीवन के लिए राजभाषा निदेशालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।





आज बेटी जा रही है,  
मिलन और वियोग की  
दुनिया नवीन बसा रही है।

मिलन यह जीवन प्रकाश  
वियोग यह युग का अँधेरा,  
उभय दिशि कादम्बिनी,  
अपना अमृत बरसा रही है।

यह क्या, कि उस घर में बजे  
वे तुम्हारे प्रथम पैंजन,  
यह क्या, कि इस आँगन सुने थे,  
वे सजीले मृदुल रुनझुन,  
यह क्या, कि इस वीथी  
तुम्हारे तोतले से बोल फूटे,  
यह क्या, कि इस वैभव बने थे,  
चित्र हँसते और रूठे,

आज यादों का खजाना,  
याद भर रह जायगा क्या?  
यह मधुर प्रत्यक्ष, सपनों  
के बहाने जायगा क्या?

गोदी के बरसों को धीरे-धीरे  
भूल चली हो रानी,  
बचपन की मधुरीली कूकों के  
प्रतिकूल चली हो रानी,  
छोड़ जाहनवी कूल,  
नेहधारा के कूल चली चली हो रानी,  
मैंने झूला बाँधा है,

अपने घर झूल चली हो रानी,

मेरा गर्व, समय के चरणों  
पर कितना बेबस लोटा है,  
मेरा वैभव, प्रभु की आज्ञा पर  
कितना, कितना छोटा है?  
आज उसाँस मधुर लगती है,  
और साँस कटु है, भारी है,  
तेरे विदा दिवस पर,  
हिम्मत ने कैसी हिम्मत हारी है।

कैसा पागलपन है,  
मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा,  
कडुवे-मीठे स्वाद विश्व के  
स्वागत कर, सहता हूँ बेटा,  
तुझे विदाकर एकाकी  
अपमानित-सा रहता हूँ बेटा,  
दो आँसू आ गये, समझता हूँ  
उनमें बहता हूँ बेटा,

बेटा आज विदा है तेरी,  
बेटी आत्मसमर्पण है यह,  
जो बेबस है, जो ताड़ित है,  
उस मानव ही का प्रण है यह।  
सावन आवेगा, क्या बोलूँगा  
हरियाली से कल्याणी?  
भाई-बहिन मचल जायेंगे,  
ला दो घर की, जीजी रानी,  
मेंहदी और महावर मानो  
सिसक सिसक मनुहार करेंगी,



बूढ़ी सिसक रही सपनों में,  
यादें किसको प्यार करेंगी?

दीवाली आवेगी, होली आवेगी,  
आवेंगे उत्सव,  
'जीजी रानी साथ रहेंगी' बच्चों के?  
यह कैसे सम्भव?

भाई के जी में उट्ठेगी कसक,  
सखी सिसकार उठेगी,  
माँ के जी में ज्वार उठेगी,  
बहिन कहीं पुकार उठेगी!

तब क्या होगा झूमझूम  
जब बादल बरस उठेंगे रानी?  
कौन कहेगा उठो अरुण तुम सुनो,  
और मैं कहूँ कहानी,  
कैसे चाचाजी बहलावें,  
चाची कैसे बाट निहारें?  
कैसे अंडे मिलें लौटकर,  
चिडियाँ कैसे पंख पसारें?

आज वासन्ती दृगों  
बरसात जैसे छा रही है।  
मिलन और वियोग की  
दुनियाँ नवीन बसा रही है।  
आज बेटा जा रही है।

माखनलाल चतुर्वेदी  
(संकलन)

## मेरी लाडली

भविष्य बुनना, स्वप्न पूरे करना,  
परन्तु परिवार की नींव मत दरकने देना।

चांदनी की परी है मेरी लाडली  
प्यार की रागिनी है मेरी लाडली

नाचती मेरे आंगन में नन्ही किरण  
रूह की रौशनी मेरी लाडली

देखो पेन्सिल से कागज पे किस ध्यान से  
लिखती बाहर खड़ी है मेरी लाडली

पापा उठ जाओ अब चाय पी लो गरम  
मुझसे फिर कह रही मेरी लाडली

क्या करूँ कॉम्पिटिशन की कोचिंग में अब  
पढ़ने को जा रही मेरी लाडली

सुन लिया रब ने एक कॉलेज में  
नौकरी पा गई है मेरी लाडली

रो रहा हूँ मगर खुश हूँ साजन के घर  
डोली में जा रही मेरी लाडली

दीप जगमग सजाती है साजन के घर  
एक गृहलक्ष्मी है मेरी लाडली

प्रमोद कुमार भट्ट नीलांचल  
मुख्य टिकट निरीक्षक, पश्चिम मध्य रेल, कटनी



प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्रीमती शशिबाला एवं श्रीमती पुष्पलता माटा, सहायक निदेशक/राजभाषा निदेशालय/रेलवे बोर्ड ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

## नित्या बिटिया की पहली रेलयात्रा

मेरी नन्ही चिड़िया, बैठी रेल में पहली बार ।  
पुलकित हर्षित मन में, आँखों में कौतुक बारम्बार ॥  
स्टेशन पर आई पहली बार, देखी भीड़ अपार ।  
पापा की गोद में बिटिया को, लागे न कोई डर ॥  
मस्ती में चढ़ती एस्केलेटर पर, बेटी उमंग भरी ।  
रेल ने लगायी मशीन, कितनी सुन्दर उड़न परी ॥  
ऊपर जाती है सीढ़ी, मजा बहुत आ रहा ।  
स्टेशन पर भी गार्डन के, झूले सा है नजारा ॥  
कितनी बड़ी दिखती है, ट्रेन ये लम्बी लम्बी ।  
पापा कहाँ बिठाएंगे, जहाँ न लगे ठंडी ॥  
बैठ ट्रेन की कुशन सीट पर, मन में मस्ती है भरी ।  
ऊधम इधर मचाने में, इक पल की भी न देर करी ॥  
मजा आ रहा खेल में, तेज है चलती रेल ।  
खिड़की से सब भाग रहे, पशु खेत पौधे और फूल ॥  
नदी नर्मदा के ऊपर, आया एक बड़ा सा पुल ।  
नीचे बहती नदिया, करती अठखेली कल कल ॥  
चले जबलपुर अपने घर से, बैठे छुक छुक ट्रेन ।  
“श्रीधाम “ आया पहले, दादी के घर वाला स्टेशन ॥  
श्रीधाम स्टेशन का, प्रसिद्ध है “आलू बंडा” ।  
पापा ने भी मुझे चखाया, लेकिन थोड़ा - थोड़ा ॥  
बेटी खुश है, लाइ जताते आते जाते यात्री ।  
टी टी अंकल ने भी, दे दी है टॉफी ॥  
इटारसी स्टेशन पर, मिला नाश्ता टेस्टी ।  
मुझको भी मिला चखने, मीठा मिल्क वेरी टेस्टी ॥  
आया है भोपाल, अब उतरेंगे हम सब ।  
बुआ के घर जाके, मजे करेंगे खूब ॥  
कितनी अच्छी छुक छुक रेल, बच्चों का रखती ध्यान ।  
दादी, बुआ और सब से मिलवाती, बिना हुए परेशान ॥  
पहली ही यात्रा में, बिटिया हुई इतनी खुश ।  
पूरे रेल परिवार को, मिल रहा आशीष अशेष ॥

-नरोत्तम नामदेव  
मुख्य वाणिज्य निरीक्षक (मुख्यालय),  
पश्चिम मध्य रेल जबलपुर

## शिक्षा और राष्ट्रीय पुनरुत्थान

शिक्षा व्यक्तित्व की समग्र विशेषताओं का समुच्चय है। किसी एक बिन्दु को लेकर हम शिक्षा को परिभाषित नहीं कर सकते, कहने का तात्पर्य सरल और स्वभाविक है कि शिक्षा उस केन्द्र की परिधि पर गतिमान सरल रेखीय गति करता हुआ आवेशित कण है जो अपने मार्ग में आने वाले अन्य कणों से टकराकर ऊर्जा प्राप्त करता है और परिष्कृत होकर अखण्ड परिधि की ओर अपना लक्ष्य निर्धारित करता है।

शिक्षा की परिभाषा देते हुए गाँधीजी लिखते हैं- 'शिक्षा से मेरा आशय बालक तथा मनुष्य में निहित शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठ शक्तियों का सर्वांगीण विकास है'। इसी विचार को उन्होंने अन्यत्र 'सा विद्या या विमुक्तये' अथवा 'शिक्षा वह है, जो मुक्ति की ओर प्रवृत्त करे' इस रूप में भी प्रस्तुत किया है। प्रश्न उपस्थित होता है कि वे कौन से बन्धन हैं, जिनसे शिक्षा मुक्ति दिलवाती है। दूसरे शब्दों में शरीर, मन व आत्मा की वे कौन सी श्रेष्ठ वृत्तियाँ हैं, जिनका विकास शिक्षा द्वारा होता है। गाँधी-विचारधारा के प्रमुख व्याख्याकार काका कालेलकर इस परिभाषा का वैश्वीकरण इस रूप में करते हैं: 'मनुष्य बन्धन में है। वह अज्ञानी है। वह अपनी प्राकृत वृत्तियों का दास है तथा परिस्थितियों से जकड़ा हुआ है। फलतः उसकी आत्मा

दबी हुई है, उसके विकास की गुंजाइश दिखाई नहीं देती। सच्ची शिक्षा उसे इन बन्धनों से मुक्त करती है। सच्चा ज्ञान अथवा शिक्षा केवल वही है, जो शरीर को रोग एवं अशक्तता से मुक्त करे, हाथ-पैर तथा अन्य कर्मेन्द्रियों को अकर्मण्यता से मुक्त करे, हृदय की कठोरता एवं ईर्ष्या से मुक्त करे, तथा सम्पूर्ण मनुष्य को सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त करे, भावनाओं को लोलुपता से, शक्ति को मद से तथा आत्मा को क्षुद्रता एवं अभिमान से मुक्त करे।'

विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ्यक्रम इन तीनों से मिलकर ही विद्यालय का निर्माण होता है। आज जिस बात को बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने फायदे की दृष्टि से वकालत कर रही हैं यह शिक्षा व्यवस्था को लघु आकार देने वाली बात है। विद्यालय वह स्थान है जहाँ विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। समाज के सारे भेदभाव मिटाकर ऊँच-नीच की भावना का अंत करता विद्यालयी परिवेश समाज के विकास का ढाँचा सुनिश्चित करता हुआ देश को भावी नागरिक प्रदान कराता है। कह सकते हैं कि समाजीकरण की प्रक्रिया का मूलभूत आधार विद्यालयी शिक्षा में निहित है।

शिक्षक अपने विद्यार्थियों से संप्रेक्षण करता हुआ तादात्म्य स्थापित करता है। कक्षा-कक्ष का यह परंपरागत शिक्षण कारगर



तो है परंतु विद्यार्थियों की रुचि अध्ययन में सक्रिय एवं ऊर्जा के साथ बनी रहे इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में कुछ तकनीकी शिक्षण शास्त्र का समावेश होना चाहिए जो कक्षा में दिये जा रहे व्याख्यान का हिस्सा हो। शिक्षक स्थानीय संसाधनों को शिक्षा में शामिल कर शिक्षण को रोचक ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। अगर इस प्रकार की शिक्षा को कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों को दिया जाएगा तो यह विद्यार्थियों के हितार्थ होगा। कक्षा-कक्ष का यह संप्रेक्षण आत्मानुभूति के स्तर से आगे बढ़कर विद्यार्थी जीवन व्यक्तित्व में अभिव्यंजना की क्षमता को पुनर्जीवित करता हुआ व्यक्तित्व विकास में सहायक और नेतृत्व कौशल संबंधी व्यावहारिक परिवेश को जन्म देगा।

जो विद्या विद्यार्थी अपने गाँव, अपने परिवेश में रहकर सीखते हैं वह जीवन भर साथ रहती है। बालक जिस परिवेश में रहता है, जीता है वही वातावरण उसको अपनेपन का एहसास महसूस कराता है। बालक उन सब वस्तुओं को ध्यान से देखता है, समझता है और उस आंचलिकता से स्वयं को जोड़ लेता है। यही से विद्यार्थियों में वस्तुओं को आत्मसात करने का गुण विकसित होता है। वस्तुओं को सहेजने के साथ-साथ वह उनसे लगाव भी रखता है। कह सकते हैं कि वास्तविक शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को और समाज के हर एक नागरिक को तभी पूर्ण रूप से शिक्षित कर पाती है जब सिखने-सिखाने के संसाधन स्थानीय चीजों से जुड़े हुए हों। नियमित दिनचर्या के कार्य-कलापों में विद्यार्थियों के

लिए सीखने-सीखाने को व्यावहारिक/प्रायोगिक मंच उपलब्ध कराना शिक्षा व्यवस्था में पुनरुत्थान का द्योतक है। अगर शिक्षा में समय के साथ-साथ नवाचारिक दृष्टि का समावेश होता रहे तो यह समाज के लिए अमूल्य उपहार होगा। राष्ट्र के पुनरुत्थान में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षा के माध्यम को लेकर हमें बहुत अधिक परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। हाँ इतना अवश्य है कि हम केवल एक ही विकल्प को अंतिम सत्य न मान बैठें क्योंकि शिक्षा महज पाठ्यक्रम ही नहीं यह तो जीवन है। सतत और अनवरत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। क्या जीवन के विशद अनुभव और भविष्य के गर्भ से अंकुरित होती बीज रूपी नागरिकता को भला किसी निश्चित समय, निश्चित पाठ्यक्रम और मात्र निश्चित माध्यम से ही शिक्षा दिया जाना न्यायसंगत होगा? विकल्प कई हो सकते हैं परंतु शिक्षा का निजीकरण अंतिम समाधान नहीं। शिक्षाविद् और सरकारी तंत्र और शिक्षा व्यवस्था के नीति-नियमकों द्वारा वर्तमान स्थिति कई संभावनाओं को लेकर आयी है। शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए आत्मनिर्भरता के साथ-साथ प्रशासनिक तंत्र को दुरुस्त करना समय की माँग है।

बढ़ती जनसंख्या के समक्ष चुनौतियाँ अपार हैं और चुनौतियों का सामना मानवता का परम कर्तव्य है। हम वर्तमान यथार्थ से मुँह नहीं मोड़ सकते हैं। हमें अगर वैश्विक स्तर पर भारत को लेकर जाना है तो हमें हर उस क्षेत्र में पूरी सक्रियता के साथ कार्य



करना होगा जिससे विकास अपने गुणात्मक परिवर्तन की दिशा को तय करे। शिक्षा हर गुणात्मक विकास का मूल है।

राष्ट्र निर्माण में हमेशा से शिक्षा, चिकित्सा और कृषि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन तीनों विषयों का आपसी समन्वय ही राष्ट्र के पुनरुत्थान की दिशा तय करता है। यद्यपि उपर्युक्त तीनों बिंदु प्राचीन समाज का हिस्सा नहीं हैं और विकास के अनवरत चरणों द्वारा आधुनिक भारतीय संस्कृति में समा गई हैं। जिससे आज हमारा समाज अपनी परंपराओं से जुड़ी हुई जानकारी को अपने व्यावहारिक जीवन में लागू करे तो हम परंपरा को आधुनिकता से जोड़कर नवाचार उत्पन्न कर सकते हैं। कह सकते हैं कि राष्ट्र उपर्युक्त बिंदुओं में सक्रियता दिखाए तो हम वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भरता के उदाहरण होंगे और विश्व पटल पर भारतीय वस्तुओं के निर्यातक भी होंगे।

शिक्षा, चिकित्सा और कृषि का मौलिक स्वरूप वैज्ञानिक होना चाहिए, साथ ही परंपरागत रूप भी अपनी स्थिति बनाये रखे। कहने का तात्पर्य यह है कि हम चिकित्सा और कृषि में कई परिवर्तन ला सकते हैं। हमें अपनी परती भूमि के साथ-साथ कृषि योग्य भूमि को भी अधिक से अधिक उपजाऊ बनाना होगा। सिंचाई साधनों के लिए स्थानीय संसाधनों को मिलकर अपनाना होगा। बीज का सही चुनाव करना होगा। फसल की सुरक्षा से लेकर मंडी स्तर तक फसल के दाम तय करने होंगे। देश के किसानों को पुनर्जीवित अर्थात् आत्मप्रेरित करना पहली प्राथमिकता

होनी चाहिए। किसानों को नई तकनीकों से परिचय कराकर प्रशिक्षित करना होगा। इन सब बातों का एक ब्लूप्रिंट तैयार करना ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है। चिकित्सा पद्धति के द्वारा हम आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार कर सकते हैं। हमें चिकित्सा के हर एक पहलू पर विचार करना होगा। पारंपरिक चिकित्सा के साथ-साथ वैज्ञानिक ढाँचा निर्मित किया जाना भी चिकित्सा को नई दिशा प्रदान करेगा। योग-शिक्षा इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि योग में सभी का हितार्थ संभव है और अपार संभावना भी है। हमें योग-चिकित्सा के कई हजारों शिविर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी रूप से स्थापित कर देने चाहिए। जिससे पर्वतीय क्षेत्र का पलायन संभवतः समाप्त हो जाएगा। लोगों को अपने ही क्षेत्रों में कार्य करने को मिल जायेगा। हिमालयी क्षेत्र आदिकाल से ही कई औषधियों का केंद्र है। यहाँ अपार संभावनाएँ बांह पसारे इंतजार में खड़ी हैं।

एक योजना जिसमें अपार-असीम-आकाश जैसी संभावनाएँ हैं, वह है हिमालयी औषधियों की चिकित्सा द्वारा आत्मनिर्भरता और स्वरोजगार के साथ-साथ पलायन भी रूक जायेगा। ग्रामीण स्तर पर कई लघु उद्योगों को स्थापित कर विकास का नया अध्याय लिखा जा सकता है। हम सबको मिलकर प्रकृति से ही तादात्म्य स्थापित करना होगा।

पर्वतीय क्षेत्रों में औषधियों के अपार भंडार हैं जिनमें मुख्य रूप से तुलसी, तेजपत्ता, अश्वगंधा, आंवला, हरड़, बहेड़ा, बेल गिलोय, लैमनग्रास आदि द्वारा



इम्युनिटी को बढ़ावा देने के साथ-साथ औषधियों के निर्माण से निर्यात द्वारा आत्मनिर्भरता भी प्राप्त की जा सकती है। भारत का उच्च हिमालयी क्षेत्र और मध्य हिमालयी क्षेत्र जीवन की संजीवनी से भरा पड़ा है।

चिकित्सा और कृषि जैसे अतिआवश्यक विषयों की मूलभूत समझ और पारिभाषिक शब्दावली विद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना एवं विषयों को अंतर्वैयक्तिक संबंधों द्वारा शिक्षण का माध्यम बनाना पाठ्यक्रम अध्ययन संबंधी सामग्री में मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही शिक्षा के कई उद्देश्यों को एक सूत्र में पिरोते हुए नवीन उद्भावनाओं को जन्म देता है।

अगर शिक्षा व्यवस्था में इन सब बिंदुओं पर विचार किया जाए और पाठ्यक्रम में 'कुछ अंश करके सीखने के सिद्धांत' को शामिल किया जाए तो निस्संदेह विद्यार्थियों की व्यावहारिक और प्रायोगिक समझ विकसित होगी और वह दिमागी कसरत द्वारा कुछ नवाचार अवश्य करेगा। यह तभी संभव है जब हमारी शिक्षा का ढाँचा सैद्धांतिक से अधिक व्यावहारिक होगा। रटने से कहीं ज्यादा प्रायोगिक होगा और इस बात को विज्ञान शिक्षण पूर्ण करता है। यहाँ शिक्षा तंत्र व्यावहारिक कहने से मतलब यह है कि हमें जो शिक्षा विद्यालय/ विश्वविद्यालय में प्राप्त हो रही है क्या वह रोजगार की गारंटी देती है? क्या विद्यार्थियों को शिक्षण संस्थानों में आज जो शिक्षा मिल रही है उससे उनका जीवन-यापन ठीक से संभव है? ऐसे कई ज्वलंत

मुद्दे हैं और कई उभरते हुए चेहरों के साथ कई सवाल जिनका जवाब शायद शोध का विषय हो।

राष्ट्र निर्माण और पुनरुत्थान में शिक्षा के महत्व से बढ़कर कुछ नहीं है। शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम इनके मूल में समाज, सिस्टम और पूँजीपति वर्ग बैठा है, और शिक्षा व्यवस्था बच्चों के उस खिलौने के समान है जिसके पंखों की गति राजनीति की हवा तय करती है। शिक्षक के लिए राजनीति से कहीं अधिक छात्रनीति है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षकों की जिम्मेदारी/दायित्वबोध सबसे बड़ा कार्य और सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। सिस्टम को चाहिए कि वह अपनी व्यवस्था ठीक करे। अगर एक भी अध्यापक शिक्षा व्यवस्था में कमजोर साबित हुआ तो उसके कई दुष्परिणाम हमें रिजल्ट के रूप में मिलेंगे।

राष्ट्र पुनरुत्थान के लिए हम सबको अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने देश की क्षमताओं को पहचानने की जरूरत है। हमें विदेशी वस्तुओं का मोह त्यागना होगा। जिन वस्तुओं को हम विदेशों से आयात करते हैं उनका अपने ही देश में सृजन करना होगा। यह सोचने की बात है कि जिस ईश्वर की हम पूजा करते हैं उन्हें भी चीन जैसे देश से आयात करते हैं। हमारे भगवान हमसे कैसे खुश रह सकते हैं। गणेशजी की मूर्ति के व्यापार से भक्ति तो हम करते हैं परंतु हमारी भक्ति की शक्ति का अर्थ चीन प्राप्त करता है। इस तरह तो हम आत्मनिर्भर बनने से रहे।

आज देश विषम परिस्थितियों से घिरा हुआ है। समाज और संस्कृति को

‘कोरोना’ जैसी विश्वव्यापी महामारी ने जकड़ रखा है। ऐसे में पूरा शिक्षा तंत्र चरमरा गया है। शिक्षा व्यवस्था की इस तरह की बदहाली भविष्य में कई प्रश्न छोड़ती है, तो हमें विपदा से लड़ने और नई रणनीति तैयार करने का सुझाव भी देती है। इस तरह की समस्या से निपटने के लिए हमको आत्मनिर्भर बनना होगा। हमें भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए एक रूपरेखा तैयार करनी होगी। मतलब ऐसा ब्लूप्रिंट तैयार करना होगा जिसमें अपार संभावनाएँ हों और आपदा राहत का बड़ा पैकेज हो और हमारी शिक्षा व्यवस्था आधुनिक संसाधनों से लैस हो। साथ ही शिक्षक भी प्रशिक्षित हों। तब तो हम पुनरुत्थान की बात सोच सकते हैं। बैठे-बैठे तो पुनरुत्थान होने से रहा। सरकार की पहली प्राथमिकता शिक्षा व्यवस्था में सुधार को लेकर होनी चाहिए। इस बीच ऑनलाइन माध्यम द्वारा शिक्षण देने का कार्य चल रहा है परंतु यह हर स्तर के विद्यार्थियों के लिए हितकर नहीं। और न ही प्रत्येक विद्यार्थी के पास एंड्रॉइड मोबाइल ही उपलब्ध है। लेकिन वर्तमान संदर्भ में ऑनलाइन का विकल्प जोर पकड़ रहा है। सरकार इसे शिक्षण की मुख्यधारा में शामिल करने की सोच बना रही है। परंतु यह शिक्षा व्यवस्था में सुधार के साथ प्रस्तुत हो सकता है, नवाचार के साथ परोसा जा सकता है और कक्षा-कक्ष शिक्षण में गुणात्मक वृद्धि भी कर सकता है। लेकिन किसी शिक्षक का कक्षा-कक्ष शिक्षण/संप्रेक्षण, विद्यार्थी, शिक्षक और दोनों के मध्य पाठ्यक्रम से बनने वाला तादात्म्य के

साथ-साथ भावनात्मकता के जीवंत आत्मिक संतुष्टि को ऑनलाइन माध्यम पूर्ण करने में शत-प्रतिशत सक्षम नहीं है। इतना सब होने के बावजूद भी ऑनलाइन की प्रमुखता को नकारा नहीं जा सकता है। गांधी का सामाजिक आदर्श है ‘सर्वोदय’। सर्वोदय का अर्थ है सबकी उन्नति और उसका ध्येय है, हृदय परिवर्तन। गाँधीवाद के मूल स्तंभ दो हैं, सत्य और समबुद्धि से सबके प्रति अहिंसा का भाव उत्पन्न हो जाता है। इस तरह गाँधी के जीवन दर्शन में त्याग और तप का प्राधान्य है तथा भोग और आनंद का तिरस्कार। कला में भी उन्होंने शिव और सत्य पर ही बल दिया, सुंदर को उन्होंने इन दोनों से या तो अभिन्न माना या अस्वीकार किया। गांधीवादी विचारधारा में कलाओं के साथ नैतिक सम्बन्ध अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इस सम्बन्ध में उनके ऊपर रस्किन एवं टाल्सटॉय के विचारों की स्पष्ट छाया है।

हम भारतीय राष्ट्र उत्थान और पुनरुत्थान को लेकर हमेशा चर्चा को केंद्र में रखते हैं और जन-समुदाय के बीच मंचों से राजनीतिक टिप्पणी देते हुए हमेशा ‘मेरा भारत महान’ वाली उक्ति कहते हैं। संविधान की प्रस्तावना भी ‘हम भारत के लोग’ से प्रारंभ होती है। लेकिन क्या आदरणीय विद्वजनों हम सभी निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देते हैं कि -

- \* स्वतंत्र भारत में दी जाने वाली शिक्षा भारतीय नहीं है?
- \* शिक्षा का माध्यम स्वदेशी भाषा या विदेशी भाषा ?
- \* शिक्षा का उद्देश्य अच्छी नौकरी प्राप्त



करवाना है या व्यक्तित्व का समग्र विकास करना?

□\* भारत में समग्र विकास की अवधारणा क्या है?

□\* शिक्षा के व्यावहारिक आयाम कौन-कौन से हैं?

□\* अंग्रेजी शिक्षा का परिणाम बुद्धि विभ्रम एवं हीनता बोध है?

□\* भारतीय शिक्षा वैश्विक संकटों का निवारण करने वाली है?

उपर्युक्त सभी बिंदु किसी भी भारतीय के लिए शोध के विषय हो सकते हैं परंतु इन बातों की जमीनी हकीकत कुछ और कहती है। 'किन्तु राजनीति का पक्ष निराधार नहीं है। आज का जीवन जिन आर्थिक विषमताओं के बीच से गुजर रहा है वह भी इस चेष्टा का एक कारण है। राजनीति में व्यक्तिगत आक्रोश और आवेश व्यक्त होता है, लेकिन जब यही आक्रोश साहित्य में आ जाता है तो वह साहित्यिक स्तर को गिरा देता है।'

जब हम भाषा, साहित्य और संस्कृति की बात करते हैं तो हम क्यों भूल जाते हैं कि हम तो किसी और भाषा के चक्कर में उलझकर रह गए हैं। हम किस संस्कृति की बात करते हैं? प्राचीन संस्कृति तो हमारी संस्कृति की ही देन है। क्या हम अपनी शिक्षा का माध्यम अपनी स्थानीय बोली/मातृभाषा को नहीं अपना सकते? भाषा तो कभी भी विकास में आड़े नहीं आती। क्या हम अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते? हमें दूसरी भाषा में सोचना पड़ता है, फिर अपनी हिंदी भाषा में उस अनुवाद को समझना पड़ता है और उसके

बाद अपनी मातृभाषा में कार्य करना पड़ता है। देश की आधी ऊर्जा तो हम भाषा के चक्कर में ही व्यय कर रहे हैं। हमें भारत को विकसित होते देखना है तो इस विषय पर गंभीरता से विचार करना होगा।

भाषा की एकता से पहले जातीय एकता जरूरी है अर्थात् पहले हम भारतीय हैं और भारत की पहचान व शक्ति हिन्दी भाषा है। वहीं हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एकता का ताज है, इसमें कोई शंका नहीं। स्वयं हिन्दी कई भाषा के शब्दों का मिश्रण हैं। हिन्दी-उर्दू के विवाद को सुलझाने के लिए एक मध्यम मार्ग की आवश्यकता गाँधी जी द्वारा महसूस की जाने लगी जिसका सूक्ष्म संज्ञान उपर्युक्त दिया जा चुका है क्योंकि "जब तक हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य कायम रहेगा तब तक उसका रूप द्विविध होगा। वह कहीं तो फारसी लिपि में लिखी जायेगी और उसमें फारसी और अरबी शब्दों की प्रधानता होगी। कहीं वह देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी और तब उसमें संस्कृत शब्दों की बहुतायत होगी। जब दोनों के हृदय एक हो जायेंगे, तब एक ही भाषा के ये दोनों रूप भी एक हो जायेंगे और उसके पास सर्वमान्य रूप में संस्कृत, फारसी, अरबी वगैरह के वे सभी शब्द होंगे, जो उसके पूर्ण विकास और विचार-प्रकाशन के लिए आवश्यक होंगे।"

आज वैश्वीकरण के युग में बहुसंस्कृतिवाद एवं बहुभाषावाद अपने पैर पसार चुका है। हिंदी भाषा/मातृभाषा के प्रति राष्ट्रवादी भावों की आवश्यकता समय की माँग है। हिंदी भाषा के प्रति विशेष अभिरुचि/भाव ऐसे हों जैसे कि धमनियों में





बहने वाले रक्त की सार्थकता उसकी शुद्धता पर निर्भर करती है। हिंदी प्रेमियों/विद्वानों को टिन के चादर की तरह झट से गरम और फट से ठंडा नहीं होना चाहिए। क्योंकि प्रचार-प्रसार/जागरूकता/ दिशा- संकेत किसी भी विषयवस्तु को मूल्यवान बना सकता है।

आवाज और प्रतिध्वनि में मुख्य अंतर ध्वनि के अनुसरण/माध्यम का है। अगर सही अनुसरण/माध्यम हो तो प्रतिध्वनि सकारात्मकता की ओर बढ़ती है तो माध्यम गुणात्मक वृद्धि का संकेत देता है। उदाहरण के लिए झींगुरों की आवाज/ सामूहिक स्वर उनकी एकाग्र महिमा का नाद-तान-लय संगीत समन्वयशीलता और अपनी भाषा के प्रति अकाट्य प्रेम प्रकट करता है। जिसकी प्रतिध्वनि हमारे कानों में गूँजती है वास्तव में वह अविस्मरणीय उपलब्धि की सामूहिक भाषा है। संस्कृति का नादमय सौंदर्य। झींगुर बहुत छोटा प्राणी है परंतु भाषाई रिश्तों/अस्मिता की अखंड झंकार को कई-कई घंटों तक बिना साज के नवाचारिक तान के साथ सुनाया करता है। क्या झींगुर के एक चूर्ण की फांक को हम निगल न सकेंगे, आँखिर हमारा अतीत भाषाई एकांत का उपजीव्य/संस्कृति का उत्थान मंच है। मानवीय मूल्यों का शिव प्रदेश है।

इतिहास में विकास का एक अर्थ स्वाधीनता की धारणा में विकास भी है। इतिहास 'समय की पहचान' बढ़ाने में हमारी सहायता करता है और चिन्तन के लिए हमें उत्तेजित भी करता है। इतिहास वास्तव में अतीत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ने

वाली श्रृंखला है। उक्त श्रृंखला में हम कहां पर स्थित हैं और हमें क्या करना है, यह सब बतलाने वाला इतिहास ही है। और हमारे देश का यह इतिहास एक भाषा को आधार बनाकर नहीं लिखा जा सकता। हमें भारत की समस्त भाषाओं को इस कार्य के लिए महत्वपूर्ण मानना होगा। किसी भाषा का सम्मान करने का अर्थ होता है उस भाषा को बोलने वाले समुदाय का सम्मान। हिन्दी भाषा का सम्पर्क यदि भारतवर्ष की अन्य भाषाओं से निरंतर बढ़ता रहेगा तो निश्चित ही हिन्दी के माध्यम से राष्ट्र की भावनाओं की अभिव्यक्ति में सहायता मिलेगी। (तुलनात्मक अध्ययन, संपादक-डॉ. बी. एच. राजूरकर और डॉ. राजमल बोरा, पृष्ठ संख्या-15, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

'प्रत्येक राष्ट्र का उसके जन्म से ही एक मूल स्वभाव होता है। उस मूल स्वभाव के अनुसार ही वह राष्ट्र इस जीवन को देखता है, जो उसकी जीवन दृष्टि कहलाती है। प्रत्येक राष्ट्र की यह जीवन दृष्टि और विश्व दृष्टि ही उस राष्ट्र का स्वधर्म कहलाता है। इस स्वधर्म के आधार पर ही उस राष्ट्र की इस जगत में एक भूमिका निश्चित होती है। हमारे देश का स्वभाव आध्यात्मिक है। इसलिए भारत में अपने स्वधर्म के अनुसार ही राष्ट्र जीवन की सभी व्यवस्थाएँ बनी हैं। अर्थात् स्वभाव व स्वधर्म के अनुसार व्यवहार और व्यवस्थाएँ सब एक दूसरे के अनुकूल और अनुरूप होने से एक समग्र जीवन शैली बनती है, वही राष्ट्र की संस्कृति कहलाती है। शिक्षा संस्कृति की वाहक है। पीढ़ी दर पीढ़ी इस संस्कृति को शिक्षा ही हस्तान्तरित करती है। भारतीय

शिक्षा, भारतीय संस्कृति को परिष्कृत करने, उसका संवर्धन करने और उसका हस्तारण करने वाली होनी चाहिए, जो नहीं है। (भारतीय शिक्षा ग्रंथमाला, मुख्य पृष्ठ-लेखन एवं संपादन- इंदुमति काटदरे, अहमदाबाद, सह संपादक-वंदना फड़के नासिक, सुधा करंजगावकर अहमदाबाद, वासुदेव प्रजापति, जोधपुर, प्रकाशक-पुनरुत्थान प्रकाशन सेवा ट्रस्ट, संस्करण व्यास पूर्णिमा, युगाब्द, 9 जुलाई 2017)

रिवर्स माईग्रेशन के तहत अब समय आ गया है कि भारत का पुनरुत्थान ग्रामीण स्तर से प्रारंभ हो। वर्तमान 'कोरोना' महामारी ने शहरी जनजीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। विकास और उद्योग के केंद्र कहे जाने वाले शहरों से मजदूरों का पलायन शहरी जीवन-शैली को प्रभावित करता है। दूसरी ओर रिवर्स-माईग्रेशन के तहत जो मजदूर शहर छोड़कर गाँव गये हैं उनके पास भी भला गाँव में कौन-सा कार्य रखा है जिससे वह अपनी आजीविका का उचित निर्वाह कर सकें। हाँ, इतना जरूर हुआ है कि बंद घरों के ताले खुल गए हैं गाँवों में लोगों के आने से रौनक बढ़ी है। अब सरकार को ग्रामीण स्तर पर कुछ नये और स्थायी प्रोजेक्ट लाने चाहिए। जिससे रिवर्स-माईग्रेशन को सही दिशा मिले और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की गति तेज हो सके। मनरेगा जैसी योजना 'हैण्ड-टू-माउथ' की उक्ति को चरितार्थ करती है। ग्रामीण स्तर पर शैक्षिक संस्थानों का निर्माण, नये विद्यालय, शैक्षिक योग्यता के अनुरूप संस्थानों का निर्माण और उनमें ग्रामीण युवाओं को रोजगार साथ ही लघु एवं कुटिर

उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए बैंकों द्वारा आर्थिक मदद देकर मॉडल गाँवों का निर्माण किया जाए। शिक्षा को केंद्र में रखकर वैज्ञानिक ढाँचा निर्मित किया जाए। जल संरक्षण से लेकर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि को भी ध्यान में रखा जाए।

भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में अपार संभावनाएँ हैं, जिनमें पर्यटन, औषधि, ईंधन सामग्री, कागज उद्योग, लघु एवं मध्यम वर्ग के कारखानों का निर्माण, लकड़ी उद्योग, फल एवं सब्जियों का उत्पादन, मुर्गी पालन, भेड़, खरगोश, बकरी, मौन पालन, बीजों एवं नई पौधों का निर्माण करना, नदी-घाटी परियोजना द्वारा बिजली का उत्पादन और ऐसे विद्यालयों का निर्माण करना जो व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए नये कोर्सों को संचालित करें। उपर्युक्त सभी बिंदुओं को विद्यालयी/विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो हमारा विद्यार्थी आत्मनिर्भर तो बनेगा ही, साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था का ग्राफ भी समयानुसार बढ़ता जायेगा। इन सब बातों का सही मूल्यांकन सरकार को समय रहते कर लेना चाहिए।

'एक विविधतापूर्ण प्रजातंत्र में मनुष्य के प्रश्नकर्ता मस्तिष्क का स्वभाव पहचान को बहु-आयामी बनाता है। किन्तु एक राष्ट्र को गतिशील एवं जीवंत बनाने के लिए एक राष्ट्रीय पहचान अत्यावश्यक है। जब राष्ट्र खतरे में हो तो राष्ट्रीय पहचान सर्वोपरि हो जाता है। (हिन्दू निशाने पर, लेखक-सुब्रमणियन स्वामी, डायमंड बुक्स, पेज-18) स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था हमें ऐसी



सर्वसम्पन्न शिक्षा चाहिए जो हमें मनुष्य बना सके। शिक्षा सिर्फ उस जानकारी का नाम नहीं है, जो आपके मस्तिष्क में भर दी गई है। हमें तो भावों या विचारों को इस प्रकार आत्मसात करना चाहिए, जिससे जीवन निर्माण हो, मानवता का प्रसार हो और चरित्र गठन हो। स्वामी विवेकानंद जी के इन्हीं विचारों से प्रेरित हो करके 'प्रधानमंत्री मोदी' जी इसमें एक और स्तंभ जोड़ने की बात करते हुए नवोन्मेष (Innovation) की बात करते हैं। जब (Innovation) अटक जाता है तो जिंदगी ठहर जाती है। कोई युग, कोई काल, कोई व्यवस्था ऐसी नहीं हो सकती है कि जो (Innovation) के बिना चल सकती है। जीवंतता का भी अगर एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है तो वह (Innovation) है। और अगर (Innovation) नहीं है तो जिंदगी बोझ होती है। व्यवस्थाएं, विचार, जिंदगी, परंपराएं ये सब बोझ-सी बन जाती हैं। अगर हम इन चारों पहलुओं को लेकर अपनी उच्च शिक्षा के पुनरुत्थान के बारे में सोचेंगे, तो हमें एक सही दिशा दिखाई देती है। उच्च शिक्षा में कई सुधारों की आवश्यकता बनी हुई है। हमें उच्च शिक्षा के लिए सर्वप्रथम बजट निर्धारित करना होगा। शिक्षा का ढाँचा बेहतर बनाने के लिए (RISE) [Revitalising of Infrastructure and Systems in Education] का गठन किया गया है। [HEFA] (Higher Education Funding Agency) की स्थापना भी की। जो उच्च शिक्षा संस्थान के गठन में आर्थिक सहायता मुहैया कराएगी।

महिला-ई हाट-विकासपीडिया- इस

पोर्टल का विकास भारत विकास प्रवेश द्वार-एक राष्ट्रीय पहल के एक भाग के रूप में सामाजिक विकास के कार्यक्षेत्रों की सूचनाएं/जानकारियां और सूचना एवं प्रौद्योगिकी पर आधारित उत्पाद व सेवाएं देने के लिए किया गया है। भारत विकास प्रवेश द्वार भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की एक पहल और प्रगत संगणन विकास केंद्र सी.डैक हैदराबाद के द्वारा कार्यान्वित है। इसके अंतर्गत कृषि/स्वास्थ्य/शिक्षा/समाजकल्याण/ऊर्जा/ई-शासन योजना और आकांक्षात्मक जिला इन बिंदुओं पर विस्तार से रूपरेखा तैयार की गई है। योजना के अंतर्गत व्यक्ति अपना पंजीकरण कर अपने लिए अपने जिले में कार्य तलाश कर सकता है। यह सरकार की ओर से पुनरुत्थान की दिशा में सकारात्मक पहल है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) के सालाना बैठक को संबोधित करते हुए भारत के पुनरुत्थान की दिशा में आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के तहत प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस बैठक में पीएम मोदी जी ने कहा है कि हमारी सरकार प्राइवेट सेक्टर को देश की विकास यात्रा में साझेदार मानती है भारत को फिर से तेज विकास के पथ पर लाने के लिए, आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए 5 चीजें बहुत जरूरी हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं- 'इंटेंट यानी इरादा, इन्क्लूजन यानी समावेशन, इन्वेस्टमेंट यानी निवेश, इन्फ्रास्ट्रक्चर यानी बुनियादी ढांचा, इन्वोवेशन यानी नवोन्मेष। 'उपर्युक्त बिंदु



किसी भी शिथिल पड़ी अर्थव्यवस्था को गति देने में सक्षम हैं। आज कोविड-19 (कोरोना) से मंद गति से चल रही जीवन-शैली के मध्य यह अभियान राहत बूस्टर के रूप में काम करेगा।

परिवार की सभी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में अपना जीवन समर्पित करने वाली महिलाओं को सही मायनों में आज भी अपने अधिकारों से वंचित रखा गया है। समाज अपनी सम्पूर्णता को तब तक नहीं पा सकता जब तक कि दुनिया की आधी आबादी को उसके अधिकारों एवं आजादी और सम्मान से वंचित रखा जाता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका को पहचानते हुए संयुक्त राष्ट्र की ओर से पहली बार वर्ष 2008 में 15 अक्टूबर को 'अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस' की भी शुरुआत की गई।

भारत सरकार की ओर से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए वर्तमान में कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उनमें प्रमुख रूप से स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार मिशन, राजीव गांधी किशोरी सशक्तिकरण योजना, जननी सुरक्षा योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना शामिल हैं। इसके अलावा महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने वर्ष 1990 में एक बड़ा कदम उठाया। इस वर्ष सरकार ने राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की जो महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और उन्हें अपनी भूमिका के प्रति जागरूक करता है।

विभिन्न सरकारी गैर सरकारी

प्रयासों के साथ-साथ महिलाएं स्वयं भी आज काफी जागरूक हो रही हैं। महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के जरिए एकजुट कार्य करते हुए सफलता की ओर बढ़ रही हैं। स्वयं सेवी संगठनों को सरकार विभिन्न प्रायोजित कार्यक्रमों जैसे नाबार्डए राष्ट्रीय महिला कोषए यूएनडीपी के जरिए सहायता भी उपलब्ध करा रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज महिलाएं सीढ़ी दर सीढ़ी प्रगति की राह पर अग्रसर हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि महिलाओं के खिलाफ अपराध समाप्त हो गए हैं। जितना वो तेजी से आगे बढ़ रही हैं उनके खिलाफ अपराध उतने ही बढ़ रहे हैं। कन्या भ्रूणहत्याएं महिलाओं के प्रति यौन हिंसा और दहेज उत्पीड़न जैसी बुराइयां समाज में आज भी कायम हैं। महिलाओं का सही मायने में सशक्त करने के लिए अभी और सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। ऐसे में महिला दिवस एक प्रतीक के रूप में उभरकर हमारे सामने आता है जो उनके अधिकारों के लिए कार्य करने को प्रेरित करता है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की बेटियों के उत्थान और उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना की शुरुआत की थी। इस योजना से काफी मदद मिली है और देश में लोगों का बेटियों के प्रति नजरिया भी बदला है।

Priyadarshini (प्रियदर्शिनी योजना) - मध्य गंगा के मैदानी इलाकों में महिला सशक्तिकरण और आजीविका कार्यक्रम के लिए एक पायलट परियोजना जो वर्तमान में यूपी और बिहार में लागू की जा रही है। यह

लाभार्थियों को सशक्त क्षमता निर्माण के माध्यम से उनकी राजनीतिक कानूनी स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए भी सशक्त करेगी। यद्यपि प्रियदर्शिनी योजना का मुख्य उद्देश्य रोजगार की सुविधाओं को बढ़ावा देना है। इस योजना के लाभार्थी अपने स्वास्थ्य के साथ साथ कानूनी और राजनैतिक मुद्दों पर भी अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकेंगे। राष्ट्र पुनरुत्थान की दिशा में इस प्रकार की योजनाओं को चरणबद्ध तरीके से लागू करना और करवाना महत्वपूर्ण कदम है।

आपदा को अवसर में बदलने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिनांक 12 मई 2020 को राष्ट्र को संबोधित करते हुए एक राहत पैकेज, आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत की है कोविड-19 महामारी संकट से लड़ने में आत्मनिर्भर भारत अभियान (Aatm Nirbhar Yojana) निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और एक आधुनिक भारत की पहचान बनेगा। पीएम मोदी राहत पैकेज जोकि आत्मनिर्भर भारत अभियान है, के अंतर्गत केंद्र सरकार द्वारा 20 लाख करोड़ रुपए, जो देश की जीडीपी का लगभग 10% है घोषित किया है।

राष्ट्र पुनरुत्थान को गति देने के लिए हमें Global Citizen और Global village के दर्शन पर सोचना ही होगा। यह विजन तो हमारे संस्कारों और भारतीय संस्कृति का प्राचीनकाल से ही हिस्सा रहा है। हम भारतीयों की प्राचीन संस्कृति तो वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः की रही है।

डॉ. चन्द्रकांत तिवारी  
देहरादून, उत्तराखण्ड

## हँसी-ठिठोली

अध्यापक- हिंदी हमारी मातृभाषा है,  
इसे पितृ भाषा क्यों नहीं कहते?

छात्र- क्योंकि माता जी ने  
कभी पिताजी  
को बोलने का  
मौका ही  
नहीं दिया।

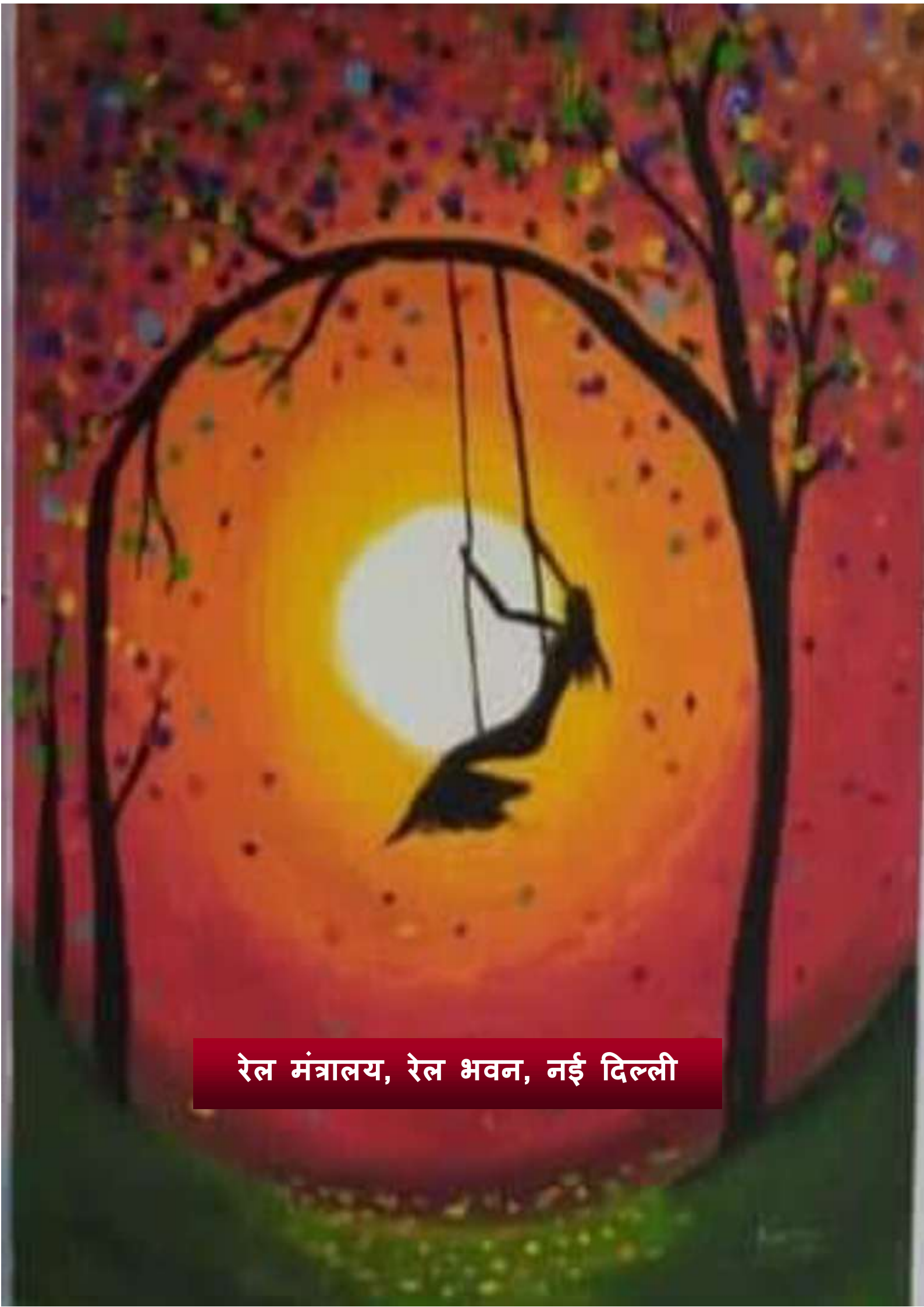


एक 😊 गांव में किसी बुजुर्ग 😊 के  
मर  
जाने से स्कूल में छुट्टी 😊 हो गयी।

स्कूल से 😊 आते वक्त बच्चों 😊 ने 2  
बुजुर्गों  
को देखा तो 😊 एक बोला- देखो दो  
छुट्टी आ रही है। 🙄



हमारे देश में अरबी बोली नहीं जाती,  
बल्कि खाई जाती है  
चीनी भी बोली नहीं जाती, सिर्फ खाई  
जाती है  
इसी तरह अंग्रेजी भी बोली नहीं जाती,  
सिर्फ पी जाती है  
हिंदी बहुत ही शक्तिशाली भाषा है,  
क्योंकि जैसे ही कोई कहता है "हिंदी  
में समझाऊं क्या"? तुरंत सारे समझ  
जाते हैं...!!!



रेल मंत्रालय, रेल भवन, नई दिल्ली